ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मार्च 2020

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा नव सम्वत्सर 25 मार्च 2020 की हार्दिक शुभकामनाएं

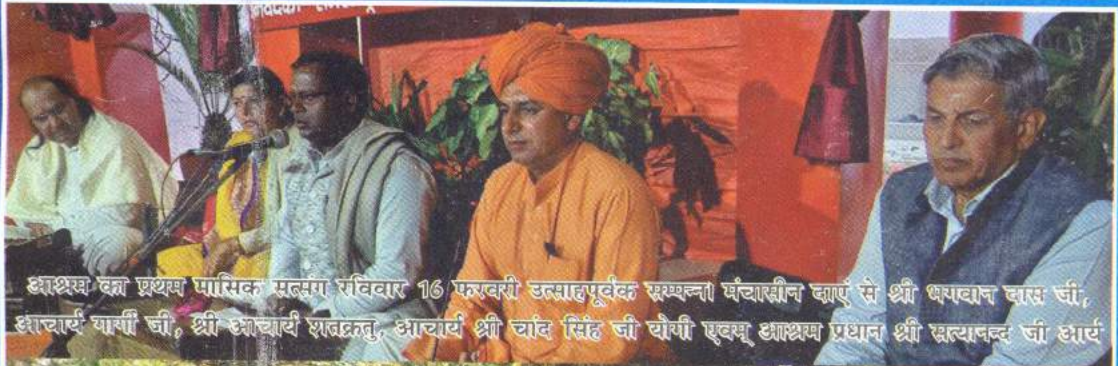

आश्रम का प्रथम मासिक सत्संग रविवार 16 फरवरी उत्साहपूर्वक सम्पन्न। मंचासीन दाएं से श्री भगवान दास जी, आचार्य गार्गी जी, श्री आचार्य शतक्रतु, आचार्य श्री चांद सिंह जी योगी एवम् आश्रम प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री मा. रामपाल जी आर्य द्वारा शाल, स्मृति चिन्ह, नगद राशि देकर पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज को सम्मानित करते हुए साथ में वैदिक वृद्धाश्रम के वृद्धजन

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

आर्य समाज धनौरा टीकरी बागपत का 44वां वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

प्रिय बन्धुओं! मास मार्च में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अप्रैल अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या **IFSC-ALLA0211948** में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओउम् ॥

आत्म–शुद्धि–पथ (मासिक)

फाल्गुन-चैत्र सम्वत् 2076 मार्च 2020

सृष्टि सं. 1972949120 दयानन्दाब्द 195

वर्ष–19) संस्थापक–स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक–03

(वर्ष 50 अंक 03)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

सम्पादक:

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव

(मो. 9896578062, 7988671343)

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

उपकार्यालय

स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, मो. 7988093485

अखेराम सरदारो, देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला–झज्जर (हरियाणा) पिन–124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
समाज में देव-निन्दक न रहें	6
अत्यधिक मोह में बचें	7
आत्मबोध ही आत्मसुख का मार्ग है	9
वैदिक धर्म अतुलनीय	11
कमजोर होते रिश्ते	13
बचाना होगा पारिवारिक विघटन को	15
हल्दीः रक्खे हेल्दी	18
देवतुल्य हैं माता-पिता और सद्गुरु	19
अन्धविश्वासों को छोड़िएःवैज्ञानिक-तार्किक जीवन..	21
प्रजा के दुःख दर्द को समझने वाला राजा छत्रपति...	22
कभी ऐसा भी हुआ था पण्डित रामचन्द्र देहलवी	25
ऋषिभक्त मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी	27
ऋषि दयानन्द के अनुसंधानपूर्ण जीवन चरित के...	28
नवीन संवत्सर मंगलमय हो	29
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर्श एवं प्रेरणा.....	31
हंसो और हंसाओ	33
दान सूंची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आश्रम का मासिक सत्संग रहा उत्साहवर्धक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आश्रम फर्रूखनगर दोनों आश्रमों के प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य की प्रेरणा से प्रत्येक मास के तीसरे रविवार को सत्संग निश्चित हुआ। स्वामी धर्ममुनि जी के आशीर्वाद मिलने के पश्चात आचार्य चांद सिंह योगी के संयोजन एवं आचार्य विक्रमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम बनाया गया। मध्याह्न 3 बजे यज्ञ का कार्यक्रम आचार्य विक्रम देव जी ने सम्पन्न करवाया वेद पाठ ब्र. हरिशंकर ने किया। यज्ञ में यजमान के पद को मा. ब्रह्मजीत आर्य, प्रधान एवं उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी ने सुशोभित किया। मुख्य वक्ता आचार्य शतक्रतु जी रहे जिन्होंने अधर्म को त्याग धर्म को पालन करने तथा मनुष्य का एक मात्र लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना बताया। भजनो के कार्यक्रम में बहन गार्गी, पं. जयभगवान व पं. रमेश आर्य झज्जर के भजनों को श्रोताओं ने खूब सराहा। ऋषि दयानन्द के 196वें जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि समर्पित करते हुये वेदान्त आश्रम से आचार्य श्री भगवांन दास जी ने एक मधुर भजन सुनाया। श्री राजवीर आर्य ने शिवरात्रि को बोधोत्सव के रूप में मानने के उपलक्ष्य में एक भजन सुनाया। इस अवसर पर सभी ने स्वामी धर्ममुनि जी को लम्बी बीमारी उपरान्त अपने मध्य पाकर प्रसन्नता व्यक्त की और आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रधान सत्यानन्द जी व सत्यपाल वत्सार्य ने भी अपना सम्बोधन रखा जिसकी सभी ने प्रशंसा की। इस अवसर पर बहादुरगढ़ केन्द्रिय सभा के अध्यक्ष कर्नल राजेन्द्र सिंह सहरावत, श्री जयपाल दहिया सपत्नी, बिमला देवी, पुरुषार्थमुनि जी, बहन रूकमेश जी स्वामी रामानन्द जी, रामदेव जी, योगाचार्य सत्यवान, लाला चतुर्भज जी, ईश्वरसिंह आर्य, मास्टर हरिसिंह, बलवानार्य माणौठी, राजकिशन, सतीश सन्दुजा, सतीश छिक्कारा, पं. वेदप्रकाश शास्त्री, विवेकानन्द शास्त्री, ब्र.कर्णदेव आर्य, श्री दयानन्द, श्री रवि शास्त्री, अर्जुन व जगमेन्दर आदि सभी आश्रम के ब्रह्मचारी सत्संग के अन्त तक अनुशासित रहे। काठमण्डी बहादुरगढ़ व आर्य समाज झज्जर रोड से भी आर्यगण उपस्थित रहे। आश्रम की तरफ से खीर व लड्डूवों के प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। शान्ति पाठ के पश्चात् मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ। हरिभूमि दैनिक अखबार में भी सत्संग की खबर विस्तार से छपी जिससे आयोजको व संयोजक का उत्साह बढ़ा। अगला मासिक सत्संग 15 मार्च को निश्चित हुआ जिसमें सभी से पधारने का अनुरोध किया।

- चांद सिंह योगी

गजानन्द आर्य स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक, वक्ता व दानवीर स्व. गजानन्द आर्य की पुण्य स्मृति में एक व्याख्यानमाला का शुभारम्भ किया गया। इसकी पहली श्रृंखला 22 फरवरी 2020 को इस्कान समागार जुहू बम्बई मे सम्पन्न हुई जिसमें आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वागीश जी ने शान्ति, क्रान्ति व भ्रान्ति विषय पर और उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने स्व. गजानन्द जी आर्य के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के प्रेरणा स्त्रोत श्री सत्यानन्द जी श्रेष्ठी व आयोजक व संयोजक उनका परिवार के सदस्य श्रीमती सविता आर्या, श्री महेन्द्र आर्य व श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। तद्पश्चात् उपस्थित आमन्त्रित आर्य नर-नारियों के लिए मधूर स्वादिष्ट सात्विक भोजन की व्यवस्था की हुई थी। इस कार्यक्रम को सभी ने पसन्द किया और परिवार के सदस्यों को इस कृतज्ञता के लिए साधुवाद दिया।

-राजवीर आर्य

योग साधकों के करतब देख हर कोई हुआ हैरान

रविवार को क्षेत्र के अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम परिसर में पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सानिध्य में गुरुकुल का प्रथम वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ बादशाहपुर के विधायक राकेश दौलताबाद ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महंत दशहरा नाथ महाराज पिलानी ने की।

इस मौके पर गुरुकुल के नन्हें योग साधकों ने कमल का फूल, फव्वारा, हवाई जहाज, पंखा, मलखम्भ, पिरामिड आदि विभिन्न मुद्राओं के योग करके सभी को हैरत में डाल दिया। विधायक राकेश दौलताबाद, जेल सुपरिटेंडेंट भोंडसी जयकिशन छिल्लर, महाबल धाम आश्रम कालियावास के श्री महंत स्वामी प्रदीप महाराज,

सच्चिदानन्द जी महाराज, किसान नेता राव मान सिंह पूर्व नगर पार्षद नीरू शर्म आदि वक्ताओं ने कहा कि भारत ऋषि मुनियों और तपस्वियों का देश है। संत महात्माओं द्वारा गुरुकुलों में दी जा रही शिक्षा के साथ बच्चों भारतीय संस्कृति व संस्कार से भी अलंकृत किया जाता है। जिस प्रकार गुरुकुल के छात्रों ने योग साधना के बल पर हैरत अंगेज कार्यक्रम प्रस्तुत किए इसके लिए सभी बधाई के पात्र तो हैं, ही साथ में शिक्षक भी जो इन नन्हें आचार्यों में वैदिक शास्त्र और यज्ञ पद्धति के साथ योग साधना में प्रवीण कर रहे है। उन्होंने कहा कि सरकार सीएमआर के तहत गुरुकुल, गौशाला आदि के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। इस आश्रम में भी सरकार की योजनाओं के तहत कार्य कराये जायेंगे, ताकि आश्रम में उभरती हुई प्रतिभाओं भी मंच मिले और देश व प्रदेश का मान रोशन करें। विधायक राकेश दौलताबाद ने अपने निजी कोष से आश्रम के संचालन में 51000/- रूपये की राशि भेंट करने की घोषणा की। इस मौके पर आचार्य चांद सिंह योगी, निर्माणपुरी महाराज, राजबीर आर्य, अधिवक्ता संदीप यादव, संजु यादव, अजय दौलताबाद, आनन्द सिंह सैहदपुर कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार, प्रदीप कुमार गुरईया, संजीव यादव, सुक्रमपाल, रूकमेश कन्हैया लाल, सत्यपाल आर्य, महात्मा विश्वमुनि जी महाराज आदि मौजूद थे।

स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ-सत्संग

स्वामी शक्तिवेश जी बलिदान दिवस का दो दिवसीय कार्यक्रम का गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। पं. जयभगवान आर्य के संयोजन में रामभगत खुडन, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, तारिक शर्मा, पहलवान प्रेमदेव, देवीसिंह आर्य, कुमारी प्राची आर्या, प्रदीप शास्त्री, संजय यादव, जिलेसिंह, पं. रामकरण, आचार्य बालेश्वर, प्रा. द्वारकादास, आचार्य योगेन्द्र, डा. श्रीनिवास पूर्व कॉलेज प्राचार्य, डॉ. एच.एस. यादव पूर्व प्राचार्य, चन्द्रपाल माजरा, आचार्य वीर सैन, दिलीप आर्य, महावीर सिंह, विजय आर्य, भजनोपदेशक धनीराम बेध कड़, जे.जे. नवीन आर्य, ओमप्रकाश यादव, भूराजप्रिय आदि गणमान्य महानुभावों ने प्रेरणादायक बातें रखीं। कुनाल आर्य यज्ञमान तथा ब्र. सुभाष आर्य यज्ञ ब्रह्मा रहे। श्रीमती सरोज आर्या एवं श्री रमेश योगाचार्य की योगा टीम ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी तथा योग संबंधित ज्ञान का परिचय दिया। महाशय रामभगत खुडन, प्रेमदेव लीलाराम, उमेद, धर्मपाल, रामकंवार, ईश्वर, जयवीर आदि महानुभावों ने स्वामी शक्तिवेश जी का संन्यास से पूर्व कृष्णदत्त शर्मा के रूप में गांव माछरौली की सरकारी स्कूल में आदर्श अध्यापक की भूमिका को कृतज्ञता से याद किया और कहा कि उन्होंने हमें अच्छे संस्कार दिये। कुमारी प्राची योगाचार्या ने कहा कि अविद्या के कारण व्यक्ति गलत कार्य करता है। जो वस्तु जैसी है उससे विपरीत समझना अविद्या है। प्रदीप शास्त्री, आचार्य बालेश्वर, प्राध्यापक द्वारकादास ने बच्चों को सुसंस्कारित करने पर जोर दिया। डॉ. श्रीनिवास प्राचार्य तथा डॉ. एच.एस.यादव प्राचार्य ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र, योगीराज कृष्णचन्द्र, महर्षि दयानन्द जैसे आप्तपुरुषों का हमें अनुसरण करना चाहिए। ब्र. सत्यकाम जी एवं श्री ओमप्रकाश रोहतक ने समाज में बढ़ती हुई अनैतिकता दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि समय रहते इन बुराइयों पर हमने रोक नहीं लगाई तो इसके भयंकर दुष्परिणाम होगें। आचार्य योगेन्द्र एवं योगाचार्य सत्यपाल वत्स ने शारीरिक उन्नति के लिए विभिन्न यौगिक क्रियाओं को सिखाते हुए हमेशा खुश रहने पर जोर दिया। ब्र. सुभाष आर्य ने स्वाहा को यज्ञ का सार तथा इदन्न मम को यज्ञ की आत्मा बताते हुए नि:स्वार्थ भावना से परोपकार करने की बात कही। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बताया स्वामी शक्तिवेश जी ने राष्ट्रीय सन्त के रूप में अपनी भूमिका निभाई। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल धासेड़ा, वैदिक आश्रम रेवाड़ी आादि संस्थाओं का सफल संचालन किया। उनके महान कार्यों से हमें आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने की प्रेरणा मिलती है। डॉ. रणबीर मल्हान, मा. पनसिंह, मामन सैनी, सज्जन, राजेन्द्र यादव, आत्माराम, रमेश मल्हान, श्रीराम यादव, हरिकिशन, रामेश्वर, सेठ गोपाल गोयल, भगत यादव, पं. वेदप्रिय, ब्र. अनन्त मेहता, ब्र. संजय आर्य, सूर्यप्रकाश, ब्र. कृष्ण यादव, सुरेश देवी आदि गणमान्य महिला-पुरुष उपस्थित रहें। ऋषिलंगर की उत्तम व्यवस्था थी।

- सुभाष आर्य, मो. 9813356991

समाज में देव-निन्दक न रहें

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्रातारं त्वा तनूनां हवामहे,
अपस्पर्तरधिवक्तारमस्मयुम।
बृहस्पते देवनिदो निबर्हय,
मा दुरेवा उत्तरं सुम्नमुन्नशन्॥

ऋग् 2.23.8

ऋषि:गृत्समद:। देवता बृहस्पति:। छन्द:जगती।

(अवस्पर्त:) हे विपत्तियों से पार करनेवाले **(बृहस्पते)** बृहस्पति परमेश्वर! **(तनूनां)** शरीरों के **(आतारं)** रक्षक, **(अधिवक्तारम्)** सर्वोपरि उपदेश करनेवाले, **(अस्मयुम्)** हमसे प्रेम करनेवाले **(त्वा)** तुझे **(हवामहे)** (हम) पुकारते हैं। तू **(देवनिद:)** देवनिन्दकों को **(निनबर्हय)** विनष्ट कर। **(दुरेवा:)** दुराचारी लोग **(उत्तरं)** उत्कृष्ट **(सुम्नं)** सुख को **(मा)** मत **(उन्नशन्)** प्राप्त करें।

हे प्रभु! तुम बृहस्पति हो, विशाल लोकों का रक्षण और पालन करनेवाले हो। स्वभावत: तुम हमारा भी, जो कि इस ब्रह्माण्ड के छोटे-छोटे बिन्दु हैं, पालन करोगे ही। तुम हमारे शरीरों के त्राता हो, हमारे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोशों के तथा अंग-प्रत्यंगों के रक्षक हो। तुम हमें विपत्तियों से पार करते हो। जब कभी हमारी जीवन-नौका संकटों में पड़ जाती है तब तुम माँझी बन पतवार से खेकर उसे किनारे लगाते हो। तुम सांसारिक जनों से ऊपर होकर हमें उपदेश करते हो। सांसारिक लोगों के उपदेशक तो अनेक बार स्वार्थ, राग, द्वेष आदि से प्रेरित होने के कारण पथभ्रंशक भी होते हैं, किन्तु तुम्हारा उपदेश सदा सन्मार्ग पर ही ले जानेवाला होता है। हे देव! हमारे प्रति तुम्हारे ये सब उपकार इसी कारण हैं, क्योंकि तुम हमें चाहते हो, सच्चे हृदय से हमसे प्रेम करते हो। अत: हम तुम्हारा आवाहन कर रहे हैं, तुम्हें अपने समीप ला रहे हैं, तुम्हें आतुरता के साथ पुकार रहे हैं कि तुम आओ, और हमें अपने वर प्रदान करो।

हे बृहस्पति प्रभु! देखो, अनेक देवनिन्दक हमें घेरे खड़े हैं वे हमारे सम्मुख ईश्वर की निन्दा, दिव्य गुणों की निन्दा और देवपुरुषों की निन्दा करके हमें आस्तिकता से दिव्य गुणों के धारण से और देवपुरुषों की संगति से रोकना चाहते हैं, और इस प्रकार संसार में नास्तिकता, राक्षसी भावों के प्रचार तथा आसुरी वृत्तिवाले पुरुषों के साम्राज्य को स्थापित करना चाहते हैं। उन समस्त देव-निन्दकों को तुम विनष्ट कर दो। ऐसी व्यवस्था करो कि दुराचारी लोग कभी उत्कर्षमय सुख को न प्राप्त करें, क्योंकि यदि वे बुरा चाल-चलन रखते हुए भी सुख भोगेंगे तो तुम्हारे न्याय से और सदाचार के महत्व से मनुष्य का विश्वास उठ जाएगा। हे भगवन्! ऐसी कृपा करो कि हमारा समाज देवपुरुषों का समाज हो जाए, उसमें एक भी देव-निन्दक न रहे। **-साभार वेद मञ्जरी**

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला, झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

अत्यधिक मोह से बचें

शास्त्रों में आया है कि काम से लज्जा, क्रोध से विवेक, लोभ से ईमानदारी, मोह से न्याय व अहंकार से प्रेम भाव आदि समाप्त हो जाते हैं, और ये पांचो अविद्या के कारण प्रत्येक मनुष्य में कम या ज्यादा मात्रा में पाये जाते है। कामी पुरुष हो या स्त्री उसकी लज्जा ऐसे ही समाप्त हो जाती है जैसे गधे के शिर से सींग। क्रोध आने पर मनुष्य विवेक भुल कर कुछ का कुछ कर बैठता है। क्रोध को विद्वानों ने महाचाण्डाल कहा है। समाज में बहुत से बड़े-छोटे अपराधों का एक कारण क्रोध भी होता है। जब हमारे मन में अत्यधिक लोभ प्रवेश कर जाता है तो चोरी, रिश्वत, ब्लैक मार्केटिंग इत्यादि के शिकार होकर किसी भी तरह से पैसा प्राप्त करना चाहते है। जब हम मोह वश होते हैं इसकी प्रबलता से तो न्याय समाप्त होकर बड़ी हानि होती है। महाभारत का युद्ध धृतराष्ट्र का पुत्रों के प्रति मोह के ही कारण हुआ। महाराज दशरथ भी राम के प्रति मोह के कारण ही मृत्यु को प्राप्त हुये। महाभारत के युद्ध में आचार्य द्रोण भयंकर युद्ध कर रहे थे। पांडव सेना बहुत भयभीत व निराश हो चुकी थी। योगेश्वर कृष्ण आचार्य द्रोण की मोह रूपी कमजोरी को जानते थे। अश्वत्थामा नामक हाथी मरवाया गया और बड़ी युक्ति से युधिष्ठिर के मुंह से कहलवाया मोह वश हुये आचार्य द्रोण को शीघ्रता से धृष्टद्युम्न के द्वारा मार गिराया नहीं तो परिणाम ही दुसरे होते। राजनीति में भी जो आजकल परिवारवाद फैला हुआ है इसके पीछे मुख्य कारण मोह ही है। आवश्यक नहीं कि एक अच्छे नेता का बेटा भी एक अच्छा नेता ही हो लेकिन मोह रूपी विकार से ग्रस्त होकर हम ऐसा कर बैठते है। मोह के कई रूप देखने को मिलते हैं। प्रथम तो संतान के प्रति मोह, दुसरा धन-दौलत के प्रति लगाव, तीसरा अपने द्वारा एकत्रित की गई भवन निर्माण सम्बन्धी सामग्री भी बड़े मोह का कारण बनती है कि यह कोठी यह कार यह बाग बगीचा मेरे द्वारा ही निर्मित किये गये है अतः सदैव मेरा इनका साथ बना रहे यह हार्दिक इच्छा होती है। सिकन्दर एक बार किसी नगर पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था उसको भूख लगी थी इसीलिए नगर से बहार एक छोटे से मकान का दरवाजा खटखटाया तो दरवाजे को एक बुढ़िया ने खोला वह सिकन्दर को पहचानती थी। बुढ़िया ने कहा कि कहिये मैं आपकी क्या सेवा करूँ। सिकन्दर ने कहा माँ मैं भुखा हूँ मुझे कुछ खाने को दो। बुढ़िया मकान के अन्दर गई और कुछ देर पश्चात वापस आई और सिकन्दर से अपनी झोली पसारने के लिए कहा सिकन्दर ने सोचा कि माई कोई खाने का सामान लेकर आई होगी लेकिन यह क्या बुढ़िया ने उसकी झोली में अपने जीवन के सारे गहने डाल दिये। सिकन्दर के पुछने पर बड़ी निर्भिकता से उस देवी ने कहा कि बेटा तुझे इसी चीज की तो भूख है तू मेरे नगर पर आक्रमण करके यही सब कुछ तो प्राप्त करना चाहता है। यह सब देखकर सिकन्दर बहुत शर्मिन्दा हुआ और उस नगर पर बिना आक्रमण किये ही आगे कूच कर गया। हमारी कई ऐतिहासिक देवियाँ हुई हैं जिन्होंने अपने मोहवश हुये पतियों का मोहभंग करने के लिए अपने जीवन को स्वाहा कर दिया। इसी मोहवश माता केकयी जो अपने समय की एक प्रसिद्ध विरांगना थी ने बड़ा अपयश प्राप्त किया। सबसे ज्यादा मोह तो राज्य का होना पाया जाता है। जितने भी मुस्लिम राजा हुये हैं उन्होंने राज्य से बड़ा कोई भी रिश्ता नहीं समझा। औरंगजेब ने अपने विद्वान भाई जो उर्दू, फारसी व संस्कृत का बहुत बड़ा विद्वान था इसलिए कत्ल करवा दिया कि लोग दाराशिकोह को चाहने लगे थे। कही मेरा राज-पाट ना छिन जाये इसी भय के कारण उसको समाप्त कर दिया। मोह की प्रबलता से कई जगह आज भी बड़ा अनिष्ट देखने को मिलता है। यह मोह रूपी जंजाल जन्म जन्मान्तर से हमें संस्कार रूप में प्राप्त होता रहता है। यहां तक यह मोह पशु-पक्षियों में भी देखने को मिलता है। इस विषय में एक दृष्टांत के माध्यम से इसे ओर स्पष्ट कर रहे है। एक किसान को नारद मुनि जी ने कहा कि स्वर्ग चलोगे किसान ने कहा कि इच्छा तो बड़ी है लेकिन बस पुत्र का विवाह हो

जाये। नारद मुनि जी अपने स्वभाव अनुसार विचरण करते हुये एक बार फिर उस किसान के पास आये और स्वर्ग चलने के लिए कहा। किसान ने कहा मुनि जी बस एक पोता हो जाये फिर चलूंगा। कुछ समय पश्चात् नारद जी फिर आये तो किसान नहीं मिला योग बल से देखा कि किसान तो बैल बन कर अपने परिवार की खेती कर रहा है। नारद जी बैल के पास पहुंचे और कहा कि स्वर्ग चलोगे। बैल ने कहा महाराज मैं अपने सुपोत्र की खेती करते हुये भूखा प्यासा अत्यन्त प्रसन्न हूँ। परिवार को लहलाती खेती देख कर मैं अत्यन्त प्रसन्न रहता हूँ, आप मेरे पीछे क्यों पड़े हैं किसी और को ले जाओ। कहने का तात्पर्य है कि आत्मा पर अंकित मोह रूपी संस्कार हमारा पीछा ही नहीं छोड़ते। इस विषय में यह भी कहना है कि मर्यादित मोह होना भी चाहिए नहीं तो इसके बिना सृष्टि का चलना कठिन है। लेकिन **अति सर्वत्र वर्जयेत्** योग दर्शन में एक सूत्र आया है।

विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपाय:॥26॥

(अर्थात् वितर्क हिंसा, लोभ, मोह आदि को योग से विरूद्ध आचरण को कहते है। ये स्वयं या दुसरों से करवाये गये तथा दुसरों का समर्थन किये जाने के स्वरूप वाले होते है। इसलिए इन वितर्कों को दु:खदायी समझकर इनके विरूद्ध भावना बनानी चाहिए।) जो साधक हैं उनके मार्ग में तो मोह बहुत बड़ी बाधा है। मनुष्य का जो अन्तिम लक्ष्य है मोक्ष प्राप्त करना उसको इसके नियन्त्रण बिना प्राप्त करना कठिन है। कवि की पंक्तियां है।

मेरे मन में तेरा रंग तो,
मेरी ज्ञान गंग तरंग हो।
मेरी काम क्रोध से जंग हो
मुझे लोभ मोह से बिसार दो।
तुझे अपने मन से मैं देख लूँ
वह ज्ञान दो वह ध्यान दो।

अत: योगाभ्यास के द्वारा हम मोह आदि कुसंस्कारों को नष्ट करने में सफल हो सकते है।

–राजबीर आर्य

गायत्री महिमा धूप, अगरबत्ती एवं हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

विशिष्ट	40.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	50.00	रु. प्रति किलो
विशेष	60.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	80.00	रु. प्रति किलो
स्वोंत्तम	140.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	320.00	रु. प्रति किलो

ओ३म ध्वज भाव इस प्रकार है

21/- ओ३म ध्वज (साइज 16X22)
42/- ओ३म ध्वज (साइज 22X34)
53/- ओ३म ध्वज (साइज 34X44)
42/- गायत्री मंत्र पटका

हवन कुंड भाव इस प्रकार है

450/- हवनकुंड 9'' स्टैंड के साथ (आयरन)
560/- हवनकुंड 12'' स्टैंड के साथ (आयरन)

लाजपतराय सामग्री स्टोर

हवन सामग्री धूप एवम् अगरबत्ती, कलावा, रौली, सिंदूर, ज्योत बत्ती, जनेऊ एवं ड्राई कोन धूप, हवन कुण्ड, ओ३म ध्वज, ओ३म पटका, गुगल, लोबान, कपूर, व अर्टिफिशल फ्लावर इत्यादि

ऑफिस - 856, (ब्रांच ऑफिस : 3543), कुतुब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110006

फैक्टरी - 195/3, नंगली, सकरावती, नजफगढ़, दिल्ली -110043

E-mail : gayatrimahima70@yahoo.com

आत्मबोध ही आत्मसुख का मार्ग है

-पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृत यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

यजु. 25-93

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी के आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

परमात्मा किसे कहते हैं?

परमात्मा उसे नहीं कहते जो कभी है और कभी न हो। परमात्मा सदैव है। पहले भी थे, अब भी हैं और आगे भी रहेंगे। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो कहीं हो और कहीं न हो। परमात्मा सर्वत्र, सर्वकाल और सर्वव्यापक है। परमात्मा उसे भी नहीं कहते जो किसी का हो और किसी का न हो वह सबका है, सबका होने से आपका भी है। परमात्मा सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं। अर्थात् वह सब प्राणिमात्र का है। आपका परमात्मा आप में मौजूद है। यदि यह बात आपकी आत्मा में ठीक से बैठ जाए तो आपको बड़ी शान्ति मिलेगी और हृदय आनन्द से भर जायेगा। आप निर्भय और निश्चिन्त होकर रहेंगे। शरीर से असंगता होते ही दृष्टि और दृश्य दोनों से एकदम सम्बन्ध छूट जाता है। केवल एक आनन्दमय स्वतन्त्र अस्तित्व रह जाता है। वहाँ न स्थान है, न काल है। आपका अस्तित्व शरीर और संसार से परे है। शरीर तो साधन सामग्री है, भोग सामग्री नहीं है। यदि शरीर को परमात्मा की धरोहर मान लें तो मानव जीवन में सदैव आनन्द ही आनन्द रहेगा।

मार्गदर्शन आत्मा-मनुष्य की आत्मा सच्चे गुरु की तरह होती है जो उसे सही मार्ग दिखाती है। यह आत्मा वह दीपक है जो इसे जीवन की सच्चाई को दिखा सकता है। बस देर है तो उसे पहचानने की, जैसे मृग कस्तूरी के लिये भटकता है पर वह उसके पास होती है। इसी प्रकार मनुष्य अपने भीतर विद्यमान अपनी आत्मा को पहचान ले तो उसे किसी की जरूरत नहीं। मनुष्य जब गलत कार्य करता है तो उसकी आत्मा उसे रोकती है, वह उस आवाज को नहीं सुनता और उसे होश तब आता है, जब वह सब गंवा चुका होता है। आत्मा की परमात्मा की आवाज होती हैं जो आत्मा की आवाज सुन लेते हैं महान् बन जाते हैं। मनुष्य को अपनी आत्मा को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा जब किसी कार्य को करने में हिचके तो वह कार्य नहीं करना चाहिए। आत्मा की आवाज न सुनने का कारण है। हमारा शरीर मन्दिर है, जिसमें आत्मा रहती है, जो परमात्मा की प्रतिनिधि हैं। बस आत्मा आवाज अर्थात् संकेत सुनने की क्षमता चाहिए।

विचारों की सार्थकता- विचारों की सार्थकता बनाने के लिए प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि समझ-बूझकर सीमित और शुभ शब्दों का प्रयोग व्यवहार में लाए जिससे वायुमण्डल प्रदूषित न हो। वायुमण्डल में घूमने वाले एक-एक शब्द प्रतिध्वनि स्वरूप गूंजते हैं। वायुमण्डल में सत्य और असत्य के दोनों शब्द अपना प्रभाव छोड़ते हैं। यह सृष्टि लोकव्यवहार है, इसलिए हमें सदैव शुभ, सत्य, अन्ध विश्वास रहित व परोपकारी शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिंए। यह शान्तिमय जीवन निर्वाह की शैली है। हम उसे जानने की चेष्ठा करें या न करें पर उस आकाश ब्रह्मरूपी भीतर की सुई हमेशा घूमती रहती है और शब्दों को अंकों से परिवर्तित करती रहती है। इस नियम को मिटाया नहीं जा सकता है। हमें एक-एक शब्द का मनन करते हुये उच्चारण में लाना चाहिए जिससे सार्थक बने निरर्थक नहीं।

संकल्पशक्ति-संकल्प शब्द की गरिमा हृदय की इच्छा से है। इसका सम्बन्ध शरीर से नहीं आत्मा

से है। संकल्प का शाब्दिक अर्थ है शुभ वेदानुकूल ईश्वर परक विचारों का पक्का इरादा। इसके लिए हमें अपना आत्मबल विकसित करना होगा। कमजोर मन वाले व्यक्ति का आत्मबल भी कमजोर होगा। आध्यात्मिक, सामाजिक, परिवारिक या व्यक्तिगत सफलता के लिए सत्य संकल्प शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। इसके बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आदर्श संकल्प की आवश्यकता पड़ती है। सामूहिक संकल्पों की शक्ति से महान् कार्य सफल हुये हैं। आज के युग में ऐसे संकल्पवान् व्यक्तियों की समाज में अति आवश्यकता है। जो भागीरथ के भाँति मजबूत निश्चयी होकर समाज की जरूरतों को पूरा कर सकें।

वाणी और कर्म-ऋतस्य पंथा न तरति दृष्कृतः- बुरे कर्म करने वाले सत्य मार्ग को पार नहीं कर सकते। ऋग्वेद यह कहता है कि सत्यपथगामी के लिए सत्य बोलना और सत्कर्म करना कितना अनिवार्य है। सत्य से उत्तम कोई धर्म नहीं है। मनु ने उचित ही कहा है हमारे किसी भी कथन की सार्थकता तब है जब हमारे कर्मों और वाणी के अनुरूप हो ईश्वरभक्त को भक्ति करते हुए सत्कर्म करने वाला भी होना चाहिए। जब कोई मन-वचन-कर्म से शुद्ध हो जाता है, तो वह देवत्व की ओर बढ़ने लगता है। यदि वाणी शुभ है तो यह परमावश्यक है मन और कर्म भी शुद्ध हैं। यह जगत तथोभूमि व कर्मभूमि भी है। हम प्रत्येक क्षेत्र में सत्य से विमुख न हो। वेदों में इसलिए प्रार्थना की गई है कि मेरी प्रवृत्ति मधुमय हो, मेरी निवृत्ति मधुमय हो, मैं मधुरता से युक्त मधुर वाणी बोलूं।

आत्मबोध-जिस दिन हमें ईश्वर, संसार और आत्मा और मानव शरीर के सम्बन्धों की गरिमा का ज्ञान होगा उस दिन हमें अपने जीवन की वास्तविकता का बोध हो जायेगा, क्योंकि ईश्वर, संसार आस्था और मानव जीवन का आपस में अन्योन्यनित सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की गणना नहीं की जा सकती। यदि हम शरीर का ही ध्यान करें तो समाज से कट जायेंगे यही स्थिति आत्मा और परमात्मा की भी है। आत्मा परमात्मा का प्रतिनिधि है। अतः आत्मा निरन्तर परमात्मा में लीन होने की दिशा में अग्रसर करती है। अंतिम किरण परमात्मा मिलन व मोक्ष है। इसके लिए सतत् प्रभुस्मरण, सेवाभाव, संयम, सदाचार, आदि ऐसे सद्गुण हैं जो हमें आत्म बोध के मार्ग पर ले जाते हैं। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करता है आत्मबोध। हम इस सत्य को जाने और जीवन को सार्थक करें।

-गढ़ निवास मोहकमपुर देहरादून, उत्तराखण्ड

आत्म शुद्धि-पथ (मासिक) सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	: बहादुरगढ़
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
6.	प्रकाशक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
9.	सम्पादक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	सम्पादक का पता,	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
	उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:

मैं स्वामी धर्ममुनि एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 15.3.2020

स्वामी धर्ममुनि (प्रकाशक)

वैदिक धर्म अतुलनीय

-स्व. चौधरी चरण सिंह

मैं जहां राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी को अपना गुरु या प्रेरक मानता हूँ, वहाँ धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में मुझे सबसे अधिक प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दी। इन दोनों विभूतियों से प्रेरणा प्राप्त कर मैंने धार्मिक व राजनीतिक क्षेत्र में पर्दापण किया था। एक ओर आर्य समाज के मंच से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध मैं सक्रिय रहा, वहीं कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में भारत की स्वाधीनता के यज्ञ में मैंने यथाशक्ति आहुतियाँ डालने का प्रयास किया।

मंगलाचरण स्वदेशी, स्वभाषा व स्वधर्म का गौरव

छात्र जीवन में, लभगभग 19-20 वर्ष की आयु में स्वामी सत्यानन्द लिखित महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी। मुझे लगा कि बहुत समय बाद भारत में सम्पूर्ण मानव गुणों से युक्त एक तेजस्वी विभूति महर्षि के रूप में प्रकट हुई है। उनके जीवन की एक-एक घटना ने मुझे प्रभावित किया, प्रेरणा दी। स्वधर्म (वैदिक धर्म), स्वभाषा, स्वराष्ट्र, सादगी, सभी भावनाओं से ओत-प्रोत था महर्षि का जीवन। राष्ट्रीयता की भावनाएं तो जैसे उनकी रग-रग में ही समायी हुई थी। इन सब गुणों के साथ तेजस्विता उनके जीवन का विशेष गुण था। इसीलिए आर्य समाज के नियमों में सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य को तत्काल त्याग देने को उन्होंने प्राथमिकता दी थी।

महर्षि दयानन्द की एक विशेषता यह थी कि वे किसी के कन्धे पर चढ़कर आगे नहीं बढ़े थे। अंग्रेजी का एक शब्द भी न जानने के बावजूद हीन-भावना ने आजकल के नेताओं की तरह, उन्हें ग्रसित नहीं किया। अपनी हिन्दी भाषा, सरल व आम जनता की भाषा में उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' जैसा महान् ग्रन्थ लिखा। इस महान् ग्रन्थ में उन्होंने सबसे पहले अपने हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों पर कड़े से कड़ा प्रहार किया। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, महिलाओं की शिक्षा की उपेक्षा, अस्पृश्यता, धर्म के नाम पर पनपे पाखण्ड आदि पर जितने जोरदार ढंग से प्रहार स्वामी जी ने किया, उतना अन्य किसी धार्मिक नेता या आचार्य ने नहीं किया। अपने समाज में व्याप्त गली-सड़ी कुरीतियों पर प्रहार करने के बावजूद स्वामी जी ने राजा राममोहनराय आदि पश्चिम से प्रभावित नेताओं की तरह, वैदिक-धर्म को उन दोषों के लिए दोषी नहीं ठहराया, वरन् स्पष्ट किया कि वैदिक, हिन्दू धर्म सभी प्रकार की बुराइयों व कुरीतियों से ऊपर है, वैदिक धर्म वैज्ञानिक व दोष-मुक्त धर्म है, तथा उसकी तुलना अन्य कोई नहीं कर सकता।

स्वामी जी ने अपने वैदिक धर्म के पुरुरूद्धार के उद्देश्य से आर्य-समाज की स्थापना की। उन्होंने नाम भी आकर्षक व प्रेरक चुना। 'आर्य' अर्थात् श्रेष्ठ समाज इसमें न किसी जाति की संकीर्णता है, न किसी समुदाय की। जो भी आर्य-समाज के व्यापक व मानवमात्र के लिए हितकारी नियमों में विश्वास रखें वहीं आर्यसमाजी 'आर्य-समाज' नाम से उनकी दूरदर्शी, व्यापक व संकीर्णता से सर्वथा मुक्त दृष्टि का ही आभास होता है।

स्वामी जी ने स्वदेशी व स्वभाषा पर अभिमान करने की भी देशवासियों को प्रेरणा दी। अंग्रेजी को वे विदेशी अपनी भाषा तथा अपनी वेश-भूषा अपनाने पर बल देते थे। जिन परिवारों में वे ठहरते थे, उनके बच्चों की वेशभूषा पर ध्यान देते थे तथा प्रेरणा भी देते थे कि हमें विदेशों की नकल छोड़कर अपने देश के बने कपड़े पहनने चाहिए, अपना काम-काज 'संस्कृत व हिन्दी' में करना चाहिए। गाय को स्वामी जी भारतीय कृषि व्यवस्था का प्रमुख आधार मानते थे। इसीलिए उन्होंने 'गोकरूणा-निधि लिखी तथा गोरक्षा के लिए हस्ताक्षर कराये। वे ग्रामों के उत्थान, किसानों की शिक्षा की ओर ध्यान देना बहुत जरूरी मानते थे।

जाति प्रथा के विरूद्ध चेतावनी

स्वामी जी दूरदर्शी थे। उन्होंने इतिहास का गहन अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला था कि जब तक हिन्दू समाज जन्मना जाति प्रथा की

कुरीति में ग्रस्त रहेगा। वह बराबर पिछड़ता जायेगा। इसीलिए उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' में तथा अपने प्रवचनों में जाति-प्रथा व अस्पृश्यता पर कड़े से कड़ा प्रहार किया। वे दूरदर्शी थे अतः उन्होंने पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी थी कि यदि हिन्दू समाज ने जाति-प्रथा व अस्पृश्यता के कारण अपने भाईयों से घृणा नहीं छोड़ी, तो समाज तेजी से बिखरता चला जायेगा जिसका लाभ विधर्मी स्वतः उठायेंगे। उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि अस्पृश्यता का कलंक हिन्दू धर्म के साथ-साथ देश के लिए भी घातक होगा।

महर्षि की प्रेरणा पर आर्य समाज के नेताओं लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द आदि ने अस्पृश्यता के विरूद्ध अभियान चलाया। आर्य समाज ने जन्मना जाति-प्रथा की हानियों से लोगों को समझाने का प्रयास किया। किन्तु आज तो जाति-पाति की भावनाएँ धर्म के नाम पर नहीं, 'राजनीतिक मठाध ीशों' द्वारा राजनीतिक लाभ की दृष्टि से अपनायी जा रही हैं। आज तो आर्य समाज को इस दिशा में और भी तेजी से सक्रिय होने की जरूरत है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों अथवा आर्य समाज के दस नियमों का पूरी तरह पालन तो बहुत ही निर्भीक, संयमी व तेजस्वी व्यक्ति कर सकता है, परन्तु इस दिशा में मैंने यथासम्भव कुछ-कुछ पालन करने का प्रयास अवश्य किया है।

मैंने सात वर्षों तक निरन्तर गाजियाबाद में वकालत करते समय एक हरिजन को रसोईया रखकर व्यक्तिगत जीवन में जातिगत भावना को जड़-मूल से मिटाने का प्रयास किया। इसके बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री के रूप में प्रदेश की शिक्षा-संस्थाओं के साथ लगने वाले ब्राह्मण, जाट, अग्रवाल, कायस्था आदि जातिवाचक नामों को हटाने का दृढ़ता के साथ कानून बनवाया। मेरे अनेक साथियों ने उस समय कहा कि इससे बहुत लोग नाराज हो जायेंगे। मैंने स्पष्ट उत्तर दिया कि नाराज हो जायें, मैं शिक्षा क्षेत्र में जातिगत संकीर्णता कदापि सहन नहीं कर सकता।' जिस दिन मेरे क्षेत्र बड़ौत के 'जाट इण्टर कॉलेज' का नाम बदलकर जाट की जगह 'वैदिक' शब्द जुड़ा, उस दिन मुझे सन्तोष हुआ कि चलो महर्षि के आदेश के पालन करने में मैं कुछ योगदान कर सका। इसी प्रकार अपनी पुत्री तथा धेवती का अन्तर्जातीय विवाह कर मुझे आत्म-सन्तोष तो हुआ ही।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भारत में महर्षि दयानन्द तथा गाँधी के आदर्शों पर चलकर ही सच्चा गौरव प्राप्त किया जा सकता है। दोनों महापुरुष भारत को प्राचीन ऋषियों के समय की सादगी, सच्चाई, न्याय व नैतिकता के गुणों से युक्त भारत बनाने के आकांक्षी थे, 'महर्षि' व 'महात्मा' दोनों ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्राचीन संस्कृति व धर्म को जीवन में महत्त्व दिया। धर्म के नाम पर किसी भी तरह घुस आयी कुरीतियों पर प्रहार किया। उनका स्पष्ट मत था कि हम विदेशियों का अन्धानुकरण करके भारत का उत्थान कदापि नहीं कर सकते। आज हमें उनसे दिशा ग्रहण कर इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बढ़ना चाहिए।

दीपावली ज्योति पर्व है। इस दिन हम अन्धकार अर्थात् अस्पृश्यता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार आदि से ऊपर उठकर प्रकाश के मार्ग पर चलने की प्रेरणा ले सकते हैं। ईमानदारी तथा नैतिकता को अपनाये बिना हम संसार में सम्मान कदापि प्राप्त नहीं कर सकते।

-भू. पूर्व प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर– दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

कमजोर होते रिश्ते

-डॉ. सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी

समाज में बढ़ रहे अपराध, व्यक्ति को बढ़ रहा तनाव, अन्य अनेक समस्याएँ कमजोर हो रहे रिश्तों के कारण ही हैं। हमें इस बात को समझना होगा कि रिश्तों पर निजी स्वार्थ हावी न होने पायें।

वर्तमान युग भौतिक-सुख-समृद्धि का युग है। कलयुग अर्थात् कल-कारखानों का युग है। उपकरण, मशीन व भौतिक सुविधाएँ जीवन मूल्यों को निगल रही हैं। हमारा चिन्तन स्वार्थ केन्द्रित हो गया है। हम दिन-प्रतिदिन संकीर्ण होते जा रहे हैं। संकीर्णता के साथ कट्टरता मिलकर विष और नीम चढ़ा कहावत को चरितार्थ करती है। अतिथि को देवता मानने वाले अपने जन्मदाताओं को ही बनेगा, नाकारा व अनावश्यक मानने लगे हैं। संस्कार, संस्कृति व सभ्यता का दम्भ भरने वाले हम पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होकर व आधुनिक शिक्षा से स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक होकर किसी के नियन्त्रण में नहीं रहना चाहते। पश्चिमी संस्कृति के दुर्गुण तो हम पर हावी होते जा रहे हैं किन्तु सद्गुणों को नहीं अपना पा रहे। इस कारण हम विकास के नाम पर अपने आप से दूर होते जा रहे हैं। अपनी संस्कृति, अपनी विरासत को न केवल हम भूल चुके हैं, बल्कि अवशेषों को भी व्यावसायिकता की इस दौड़ में सड़क पर ला पटका है। आर्थिक विकास की दौड़ में प्रवासी होकर घर से बाहर नौकरी करते हुए, रोज-रोज के स्थानान्तरणों व आवाज समस्या से परेशा, हम माता-पिता या दादा-दादी को अपने पास रखने की तो बात ही क्या है; पति-पत्नी व बच्चे भी साथ-साथ एक ही छत के नीचे नहीं रह पा रहे हैं। हमारी मानसिकता इतनी निकृष्ट हो गयी है कि हम अपने माता-पिता व दादा-दादी को भी अपने परिवार का अंग नहीं मानते। परिवार की परिभाषा इतनी संकुचित हो गयी है कि उसके अन्तर्गत पति-पत्नी व बच्चों के सिवा किसी को सम्मिलित ही नहीं किया जाता।

कूटनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री व महान राजनीतिक चिन्तक चाणक्य के महान ग्रन्थ चाणक्यनीति में एक श्लोक मिलता है जो हमारे प्राचीन आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है-

त्यजेदेकम् कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलम् त्यजेत्।
ग्रामम् जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत्॥

इससे पता चलता है कि व्यक्ति नहीं, समष्टि महत्वपूर्ण है। इसका आशय है कि व्यक्ति को कुल के हित के लिए स्वहित का परित्याग करने को तत्पर रहना चाहिए। सम्पूर्ण ग्राम के हित में निर्णय लेते समय यदि कुल का अहित होता हो तो भी हमे हिचकनी नहीं चाहिए, सम्पूर्ण राज्य के हित के लिए ग्राम के हितों की परवाह करने की आवश्यकता नहीं है, यही नहीं आत्मलाभ, प्राणिमात्र के हित के लिए पृथ्वी का भी परित्याग करना पड़े तो सदैव तैयार रहना चाहिए। यह आदर्श ही हमारे जीवन का आधार था, तभी हम विश्व-गुरु के स्थान पर प्रतिष्ठित हुए थे। यह आदर्श था, तभी विदेशी इतिहासकारों ने लिखा है कि भारत के घरों में ताले नहीं लगते थे। यह आदर्श था तभी एक ऐसा बालक जिसको उसके माँ-बाप पाल नहीं पा रहे थे, भारत का प्रमुख सम्राट बना और चन्द्र गुप्त मौर्य के नाम से विश्व में मशहूर हुआ। यही आदर्श था जिसके लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने राज्य को छोड़कर जनता को दानवी अत्याचारों से मुक्त करने व अंधविश्वास तथा रूढ़ियों को मिटाने के लिए चौदह वर्ष तक अपने प्रिय भाई व पत्नी के साथ वनों की धूल छानी।

आज हम इन आदर्शों को भूले भी नहीं हैं, पर इन्हें हमने अपने आचरण से निकाल दिया है। आज किसी को भी देखो-दूसरों को उपदेश देने के लिए सभी आदर्श याद रहते हैं किन्तु जब अपने हित की बात आती है तो 'सब चलता है' जुमला सामने आ जाता है। पर उपदेश कुशल बहुतेरे की कहावत सर्वत्र चरितार्थ होती देखी जा सकती है। जीवन मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों को जीवन में ढालने वाले व्यक्ति को व्यावहारिक होने

के उपदेश स्थान-स्थान पर सुनाये जाने लगते हैं। आज व्यक्ति, समष्टि की अपेक्षा व्यक्ति को, अपने आप को सबसे अधिक महत्व देने लगा है। आज चाणक्य का उक्त श्लोक उल्टा करके व्यवहार में लाया जाने लगा है।

आज हम अपने हित के लिए विश्व, देश, ग्राम, समुदाय, परिवार व यहाँ तक कि अपने बच्चों, पति या पत्नी तक को भी प्रयोग करने से नहीं चूकते। यदि हम समाज, समुदाय या परिवार का किंचित् भी ध्यान रखते तो अमृत के समान दुग्ध में रसायन नहीं मिलाये जाते, शीतल पेय में हानिकारक कीटनाशक नहीं डाले जाते। भाई-भाई का गला नहीं काटता। माँ-बाप फालतु सामान प्रतीत नहीं होते। हिंसा, झूठ, चोरी व बलात्कार का जो स्तर आज है इसी से प्रमाणित होता है कि हमारे बीच किसी भी प्रकार के रिश्ते नहीं रह गए हैं। हमारी मानसिकता इस कदर विकृत हो चुकी है कि हम अपनी कमियों को स्वीकार न कर, अपनी लापरवाही व निकम्मेपन का दोष भी अपने माता-पिता पर ही मढ़ने की कोशिश करते हैं। जो कुछ भी अच्छा होता है, उसका श्रेय किसी के साथ बाँटना नहीं चाहते तथा जो कुछ भी बुरा होता है उसकी जिम्मेदारी दूसरों के सिर डालकर अपने आप को साफ बचाने का प्रयत्न करते हैं। लगता हमें ऐसा ही है कि हमारी कोई जिम्मेदारी थी ही नहीं, क्योंकि जिन बड़े-बुजुर्गों पर हम ये जिम्मेदारी डालते हैं, वे बुजुर्ग या तो हमारी कृपा पर जीते हैं या तो हमारी कृपा पर जीते हैं या दर-दर की ठोकर खाते फिरते हैं। उनकी महानता तो देखिए इसके बाबजूद भी वे हमारा भला ही चाहते हैं। उनकी दु:ख का अहसास तो हमें तब ही हो पायेगा जब हम उस स्थिति में पहुँचेंगे। किन्तु तब तक समय काफी आगे निकल चुका होगा, हम हाथ मलने के सिवाय कुछ नहीं कर पायेंगे।

रिश्तों का कमजोर होना, परिवार का कमजोर होना है। परिवार का कमजोर होना, समाज का कमजोर होना है। समाज का कमजोर होना व्यक्ति को संरक्षणहीनता की स्थिति में छोड़ देना है, क्योंकि समाज की व्यक्ति को विकास के अवसर व संरक्षण प्रदान करता है। समाज में बढ़ रहे अपराध, व्यक्ति को बढ़ रहा तनाव, अन्य अनेक समस्याएँ कमजोर हो रहे रिश्तों के कारण ही हैं। अत: हमें समझना होगा कि रिश्तों पर निजी स्वार्थ हावी न होने पायें। रिश्तों को बचाने के लिए सतत प्रयास, किये जाने की आवयकता है। रिश्तों के अभाव में व्यक्ति संतुष्टि नहीं पा सकता।

–जवाहर नवोदय विद्यालय केन्द्रीकोणा
साउथ वैस्ट गारो, हिल्स-794106, मेघालय

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 5100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 250000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी भरपूर सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

बचाना होगा पारिवारिक विघटन को

–रूपनारायण काबरा

आचार्य महाप्रज्ञ के अनुसार मनुष्य की तीन बड़ी अपेक्षायें होती हैं- आश्वासन, विश्वास व विकास अर्थात् मनुष्य आश्वासन चाहता है-बुढ़ापा आयेगा तब क्या होगा? बीमारी आयेगी तब क्या होगा? कौन देखभाल करेगा, कौन सहायता करेगा, कौन संभालेगा और कौन संरक्षण देगा–वह आश्वासन चाहता है निश्चिंतता के लिए और इसी आश्वासन के रूप में ही तो परिवार की संरचना हुई है। दूसरी अपेक्षा है विश्वास। वह कौन है जिस पर भरोसा किया जा सके, सारी संपदा की चाबियाँ जिसे सौंपी जा सके, जिन्हें जीवन-मरण, सुख-दुःख, हानि-लाभ का साथी माना जा सके। इसी विश्वास की प्रतिपूर्ति के लिए ही परिवार संस्था का निर्माण हुआ। परिवार संरचना के पीछे विश्वास एक बड़ा कारण रहा है, परस्पर इतना विश्वास के लिए जिसे दूसरा कोई सहज में तोड़ नहीं सके और तीसरी अपेक्षा है विकास। विकास भी मानव की सहज आकांक्षा है। विकास के लिए सहयोगी अपरिहार्य है और परिवार ही तो वह सहयोगी है जो कहता है-''तुम तो विकास की यात्रा पर बढ़ो, जितना बढ़ा जाये बढ़ो, पीछे की चिंता मत करना, हम हैं।'' यह प्रोत्साहन ही तो परिवार है।

विदेशी समाजशास्त्रियों की टोलियाँ भारत में प्रायः आती रहती हैं और संयुक्त परिवार प्रथा का अध्ययन करती हैं। संयुक्त परिवार उन्हें एक चमत्कार सा लगता है क्योंकि उन्हें समझ में नहीं आता कि कैसे रह लेते हैं लोग एक साथ। वे आश्चर्य करते हैं किन्तु अब अपने ही देश में यह संयुक्त परिवार प्रणाली विवाद का विषय बनती जा रही है। वस्तुतः संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना का एक वह स्वरूप है जो पाठशाला है एकता की, सहिष्णुता की, सह-अस्तित्व की, सहयोग की, प्यार, प्रेम और त्याग की।

संयुक्त परिवार समाज की वह इकाई है जिसके सदस्य परस्पर मिलकर रहते हैं, एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं। एक-दूसरे को स्वीकारते हैं। सुख और दुःख को बाँटकर चलते हैं। वे अपने को कभी अकेला नहीं महसूस करते, कभी किसी दूसरे के सामने हाथ नहीं फैलाते क्योंकि उनके पास परिवार की शक्ति और सामर्थ्य होती है। अभी भी हमारे देश में कई संयुक्त परिवार हैं और साथ ही टूटते परिवार और टूटे परिवार भी हैं, जो भले ही बुजुर्गों से अपने को स्वतन्त्र समझते हैं पर कितने परेशान हैं। कोई बीमारी हो जाती है तो कौन अस्पताल लेकर जायेगा, कौन अस्पताल में सोयेगा और कौन घर पर? पति-पत्नी काम पर चले जाते हैं तो कौन बच्चों को संभाले? पति दफ्तर चला जाता है या कार्यवश दौरे पर बाहर जाता है तो पीछे बच्चों तथा पत्नी की क्या सुरक्षा? कौन संभाले उन्हें। कभी आर्थिक स्थिति डगमगा जाती है तो कहाँ जाएँ, क्या करें? एक नहीं, कई मुसीबतें हैं और चुनौतियाँ आती रहती हैं जिनका कि संयुक्त परिवार में सहज, स्वाभाविक समाधान है। आज के एकाकी परिवार में बच्चों को खीझ भरे, हारे-थके माता-पिता की डाँट-फटकार मिलती है। ये बच्चे दादा-दादी की गोद की गर्माहट एवं उनकी स्नेह भरी बातों से वंचित रहते हैं। माता-पिता को भला कहाँ वक्त है?

क्यों टूटते जा रहे हैं परिवार? क्यों आज हम अपने ही माता-पिता से, दादा-दादी से, भाईयों से अलग होना चाहते हैं? पारिवारिक विघटन का कारक है असहिष्णुता एवं स्वार्थी, संकीर्ण दृष्टिकोण। जब कुछ लोग अर्थात् एक ही परिवार के सदस्य भी मिलकर नहीं रह सकते हैं तो सामाजिक एकता पर तो अपने आप ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। सहिष्णुता, प्रेम, त्याग एवं सहयोग की जो शिक्षा हमें संयुक्त परिवार में मिलती है वह हमारे संकुचित दृष्टिकोण को व्यापक एवं विशाल बनाती है। हम स्वयं के घेरे से बाहर निकलना

सीख जाते हैं और सत्ता अर्थात् घर के मुखिया को स्वीकारना सीख जाते हैं, दूसरे के दु:ख को अपना दु:ख समझना सीख जाते हैं और इन्हीं मूल्यों पर, इसी प्रशिक्षण पर, इन्हीं आस्थाओं पर तो टिका होता है संयुक्त परिवार। आज परिवारों में केवल अपनी चिंता बढ़ती जा रही हौ। किन्तु अन्य के हित की कल्याण की अपेक्षा हो रही है और इसी से विरोध भाव पैदा होता है एवं अनुशासन क्षीण हो जाता है। भावनाओं में एकरूपता नहीं है, सामूहिक भावना विकसित नहीं हो पा रही है, विचार स्वातंत्र्य की नई रोशनी ने विद्रोह के भाव पैदा कर दिये हैं और इसी कारण संयुक्त परिवार का कोई आधार या पृष्ठभूमि नहीं बन पाती है। परिवार के मुखिया को परिवार के साथ परिवार के समग्र कल्याण का भी ध्यान रखना होता है। सफल परिवार प्रबन्धन के सूत्र हैं समता, न्याय और करूणा। ये आध्यातिमक भाव-भावना के सूत्र भी हैं और सही न्यायोजित प्रबन्धन के भी। जहाँ भेदभाव है अर्थात् समता नहीं है प्रबंधक सम्यक नहीं चलेगा, जहाँ न्याय नहीं है वहाँ विरोध पनपेगा और जहाँ करूणा नहीं है वहाँ हृदय जीतने का तो प्रश्न ही नहीं है फिर प्रबन्धन कैसें होगा? जिस परिवार के मुखिया के मन-मानस में न्याय, समता और करूणा के आदर्श नहीं है वह सफल प्रबंधक नहीं हो सकता। हर व्यक्ति अपने में ही सम्पूर्ण भी है और अपूर्ण भी है। सब कुछ सापेक्ष है। परिवार एक ऐसी इकाई है जहाँ व्यक्ति अपनी संपूर्णता का लाभ उठते हुए आनन्द एवं प्यार का अनुभव करता है। आनन्द और प्यार दोनों ही भौतिक वस्तुओं में नहीं है, यह तो स्वयं हमारे ही है। आज के परिप्रेक्ष्य मं अगर परिवार एक साथ प्रार्थना करे, भोजन करे एवं स्वयं की त्रुटियों तथा दूसरे सदस्यों के गुण देखें तो किसी भी विषम परिस्थिति में वह परिवार संगठित रह सकता है। पीढ़ियों के बीच खाई बढ़ती जा रही है क्योंकि रहन-सहन, खान-पान, जीवन-शैली एवं जीवन-मूल्यों में परिवर्तन द्रुत गति से आ रहे हैं। युवा वर्ग में तेजी से आ रहे सांस्कृतिक परिवर्तन बुजुर्गो के गले नहीं उतर रहे हैं। युवा बदल नहीं सकते, बुजुर्ग सामंजस्य नहीं कर पाते तो फिर खाई तो बढ़ेगी। वैसे युवा और बुजुर्गो की खाई कोई आज नहीं है। हर पीढ़ी में युवा एवं बुजुर्गो के बीच अंतराल रहा ही है। बुजुर्गो को युवाओं से शिकायतें रही हैं और रहेगी। पर यदि युवा बुजुर्ग की बुजुर्गियत को स्वीकारें और बुजुर्ग भी युगधारा के प्रभाव को पहचाने और स्वीकारें तो फिर सामंजस्य मुश्किल नहीं। महानगरों की बढ़ती संख्या तथा उनके प्रभाव का भी परिवार विघटन से सीधा सम्बन्ध है। बढ़ती हुई महत्वाकांक्षायें, असहिष्णुता, अपेक्षायें, ईर्ष्या, भोगवाद, स्वार्थान्धता इत्यादि संयुक्त परिवार के विघटन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं। परिवार के विघटन में नारी की नकारात्मक भूमिका सर्वाधिक प्रभावी है। पूर्व में नारी त्याग, सेवा, स्नेह एवं ममता की प्रतीक थी वहीं आज नारी स्वातंत्र्य ने महिलाओं को असहिष्णु, स्वार्थी, भोगवादी, बेबाक एवं संवेदनहीन बना दिया है। नारी पहले परिवार को जोड़ने की दिशा में सचेष्ट थी वही आज तोड़ने को तत्पर रहती हैं। परिवार की संरचना चाहे एकल केन्द्रित हो या संयुक्त सहनशीलता, शालीनता, समादरभाव, पारस्परिक सौहार्द, त्याग एवं संलग्नता अत्यावश्यक सामाजिक मानवीय तत्त्व है। एक सांस्कृतिक जन-चेतना की आवश्यकता है जो परिवार के मूल ढाँचे को विघटन से बचा सके।

आप सभी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता केवल टाईप की हुई सामग्री ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

-विक्रमदेव शास्त्री

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, लाजपत नगर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
73. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
74. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
76. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
77. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

हल्दीः रक्खे हेल्दी

–डॉ. विभा सिंह

हल्दी धार्मिक दृष्टि से पवित्र एवं शुभ मानी जाती है तथा प्रत्येक घर में सब्जियों में भी इसका प्रयोग होता है। इसके अनेक औषधीय गुण हैं जो हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। हल्दी स्वभाव में तिक्त, रूक्ष, कफ, पित्त, त्वचा के दोष, रक्तदोष, सूजन, मधुमेह एवं व्रण को दूर कर, राहत पहुँचाने वाली है। आयुर्वेद की अनेक औषधियों के निर्माण में हल्दी का प्रयोग होता है। आयुर्वेदिक तेल, घृत, आसव आरिष्टों एवं चूर्णों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है। पारद संहिता में हल्दी के कल्प का वर्णन किया गया है। हल्दी के प्रमुख औषध ीय गुण इस प्रकार हैः-

चोट व घाव परः यदि शरीर के किसी भी भाग में चोट लग गई हो और वहाँ सूजन आ गई हो, तो हल्दी पीसकर एवं उसमें चूना मिलाकर उस स्थान पर लेप करना चाहिए। यदि चोट भीतरी हो, तो गाय के गुनगुने दूध में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। ऐसा करने से दर्द कम हो जाता है और यदि घाव हो गया हो, तो इसका लेप लगाने से घाव के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। इस तरह यह कीट नाशक भी हैं। व्रण पर इसका चूर्ण रखने से घाव शीघ्र भर जाता है। यदि फोड़ा फूटा हुआ न हो, तो अलसी के पुल्टिस में हल्दी मिलाकर फोड़े पर बांधने से फोड़ा जल्दी पककर फूट जाता है एवं मवाद बाहर आ जाता है और घाव जल्दी ही ठीक हो जाता है।

एलर्जी में लाभदायकः- हल्दी का प्रयोग चर्म रोग, जुकाम एवं श्वास की एलर्जी में भी लाभदायक होता है।

खांसी में लाभदायकः- हल्दी व आमी हल्दी दो माशा, इन दोनों को पानी के साथ पीसकर मटर के दाने के बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह एवं शाम जल के साथ सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। यदि खांसी सूखी हो तो गर्म दूध में हल्दी का एक चम्मच चूर्ण मिलाकर पीने से कफ बाहर आ जाता है। सूखी खांसी में शहद के साथ भी हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। इनकी गोलियाँ बना लेनी चाहिए एवं जब खांसी आये तो मुंह में रखकर चूसना चाहिए, इससे खांसी का वेग कम हो जाता है।

नेत्र रोग में उपयोगीः- आँख सम्बन्धी बीमारियों में हल्दी विशेष उपयोगी होती है। यदि आँख लाल हो गई हो तो आंखों पर हल्दी का लेप करने से लालिमा समाप्त हो जाती है। हल्दी को महीन पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। रात को सोते वक्त सलाई से आंखों में लगाना चाहिए। ऐसा करने से आंख की ज्योति बढ़ती है।

उदर गैसे में लाभदायकः- यदि पेट में गैस बन रही हो तो पिसी हुई हल्दी 10 रत्ती एवं इतनी ही मात्रा में काला नमक मिलाकर गर्म जल के साथ सेवन करने से तत्काल लाभ पहुँचता है।

दंत रोग में उपयोगीः- यदि दाँत में दर्द होता हो या अन्य विकार हो, तो हल्दी का मंजन विशेष उपयोगी होता है। मंजन बनाने हेतु हल्दी की गांठ को धीमी आंच पर भूनना चाहिए और भूनकर इसे बारीक पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। इसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर शीशी में भर लें एवं प्रतिदिन प्रातः काल तथा सायं खाने से पूर्व इसका मंजन करना चाहिए।

कर्ण रोग में उपयोगीः- कान बहने, दर्द, पीव या मवाद होने पर हल्दी का प्रयोग विशेष लाभकारी होता है। कान की तकलीफ होने पर हल्दी को उसकी मात्रा में दोगुने पानी में महीन पीसकर छान लेना चाहिए। इसकी बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर धीमी आंच पर पकाना चाहिए। कान सम्बन्धी तकलीफ हो तो गुनगुना करके दो-तीन बूंदे कान में डालें।

मुख सम्बन्धी रोगों में भी लाभदायकः- मुख सम्बन्धी तकलीफ तथा हलक, तालू एवं मुंह में छाले पड़ जाने की स्थिति में गिल्टियाँ निकल आने की स्थिति में हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। मुंह में छाले होने पर एक तोला हल्दी को कूट-पीसकर एक लीटर पानी में उबालना चाहिए एवं सुबह-शाम कुल्ला करना चाहिए। ऐसा करने से मुख के अन्दर के छाले ठीक हो जाते हैं तथा जलन समाप्त हो जाती है। यदि गले में गिल्टियाँ निकल आई हों तो हल्दी को महीन पीसकर छः माशा की मात्रा में सुबह जल के साथ सेवन करना चाहिए। साथ ही साथ हल्दी को पानी में पीसकर हल्का गर्म करके गले पर लेप करना भी लाभदायक होता है।

–विभावरी जी-9, सूर्यपुरम, झांसी-284003,
उत्तर प्रदेश, मो.9415055655

देवतुल्य हैं माता-पिता और सद्गुरु

- डॉ. शैलजा अरोड़ा

हमारे धर्मशास्त्रों में मनुस्मृति का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है और इसके रचयिता राजर्षि मनु के विचार भारतीय मनीषा में सर्वमान्य हैं। माता-पिता, गुरुजनों एवं श्रेष्ठजनों को सर्वदा प्रणाम, सम्मान और सेवा करने के संदर्भ में मनुस्मृति का अधोयोलिखित श्लोक बड़ा ही अनुकरणीय और मननीय है-

अभिवानशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विघा यशोबलम्॥

(2/121)

अर्थात् वृद्धजनों यथा माता-पिता, गुरुजनों एवं श्रेष्ठजनों को सर्वदा अभिवादन-प्रणाम तथा उनकी सेवा करने वाले मनुष्य की आयु, विद्या, यश और बल-ये चारों बढ़ते हैं। मनुस्मृति के एक अन्य श्लोक में माता-पिता और आचार्य को अति महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए कहा गया है कि दस उपाध्यायों से बढ़कर एक आचार्य होता है-सौ आचार्यो से बढ़कर पिता होता है और पिता से हजार गुना बढ़कर माता गौरवमयी होती है। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है-''मातृदेवो भव'', ''पितृदेवो भव'', ''आचार्यदेवो भव'' अर्थात् माता-पिता और आचार्य को देवता मानो। ये तीनों प्रत्यक्ष ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं। इन्हें सदैव संतुष्ट और प्रसन्न रखना हमारा धर्म है। गरुड़पुराण में कहा गया है कि माता-पिता के समान श्रेष्ठ अन्य कोई देवता नहीं है। अतएव सदैव सभी प्रकार से हमें अपने माता-पिता की पूजा और सेवा करनी चाहिए।

श्री वाल्मीकि रामायण में भगवान राम सीताजी से कहते हैं-जिनकी सेवा से अर्थ, धर्म और काम तीनों पुरुषार्थों की सिद्धि होती है, जिनकी आराधना से तीनों लोकों की प्राप्ति हो जाती है, उन माता-पिता के समान पवित्र इस संसार में दूसरा कोई भी नहीं है, इसलिए हम लोग इन प्रत्यक्ष देवताओं की आराधना करते हैं। महाभारत में भीष्म पितामह राजा युधिष्ठिर को धर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं-राजन्। समस्त धर्मो से उत्तम फल देने वाली माता-पिता और गुरु की भक्ति है। मैं सब प्रकार की पूजा से इनकी सेवा को बड़ा मानता हूँ। इन तीनों की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। पद्मपुराण में कहा गया है-

सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत।

(सृष्टिखण्ड 47/11)

अर्थात् माता सर्वतीर्थमयी और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप है इसलिए सभी प्रकार से यतनपूर्वक माता-पिता का पूजन करना चाहिए। जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा सातों द्वीपों से युक्त पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। गणेश जी द्वारा माता पार्वती और पिता महादेव की परिक्रमा करने के कारण ही वे माता-पिता के लाड़ले बने और और भी अग्रदेव और विघ्नविनाशक के रूप में घर-घर में पूजे जाते हैं। शास्त्र कहता है कि माता-पिता अपनी संतान के लिए जो कष्ट सहन करते हैं, उसके बदले पुत्र यदि सौ वर्ष तक माता-पिता की सेवा करे तब भी वह उनसे उऋण नहीं हो सकता। श्रीरामचरितमानस में भगवान श्रीराम अनुज लक्ष्मण को माता-पिता और गुरु की आज्ञापालन का फल बताते हुए कहते हैं कि जो लोग माता-पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा को स्वाभाविक ही शिरोधार्य कर पालन करते हैं, उन्होंने ही जन्म लेने का लाभ प्राप्त किया है, अन्यथा जगत में जन्म लेना ही व्यर्थ है। जो पुत्र उचित-अनुचित कर विचार छोड़कर पिता के वचनों का पालन करते हैं, वे सुख और सुयश के पात्र होकर स्वर्ग में निवास किया करते हैं।

मातृ पिता स्वामि सिख सिर धरि,करहिं सुभायँ।
लहेहू लाभू तिन जनम कर न तरू जनमु जग जायँ॥
अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन॥

धर्मग्रन्थों में गुरुतत्त्व परब्रह्म के समान बताते हुए उसकी अपार महिमा का वर्णन किया गया है। गुरु ही हमें ईश्वर से मिलने का मार्ग बताता है। वह हमें असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने का कार्य करता है। हमारे धर्मशास्त्रों में माता-पिता और गुरुजनों का निरादर करने, उनकी बातों की अवहेलना करने और उन्हें दुःख पहुँचाने वालों की भर्त्सना की गई

है। वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि जो माता-पिता और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के वश में पड़कर उस पाप का फल भोगता हैं पद्मपुराण में भी कहा गया है-जो पुत्र अंगहीन, दीन, वृद्ध, दु:खी तथा रोग से पीड़ित माता-पिता को त्याग देता है, वह कीड़ों से भरे हुए दारूण नरक में पड़ता है। जो पुत्र अपने कटु वचनों द्वारा माता-पिता को दु:खी करता है, वह पापी बाघ की योनि में जन्म लेकर घोर दु:ख उठाता है।

आज संस्कारहीनता और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने के कारण वर्तमान पीढ़ी द्वारा माता-पिता एवं गुरुजनों की उपेक्षा ही नहीं अपितु उत्पीड़न तक हो रहा है। वृद्ध माता-पिता को बोझ समझकर भगवान भरोसे छोड़ा जा रहा है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती हुई संख्या और माँग इस बात का प्रमाण है कि माता-पिता अनावश्यक वस्तु की श्रेणी में रखे जाने लगे हैं। वे आज जीवन के अंतिम पड़ाव में सेवा, सहानुभूति, चिकित्सा और प्रेम के दो मीठे वचनों को सुनने के लिए तरस रहे हैं। जो पुत्र बचपन में माता-पिता को अपने मूत्र से गीले हुए बिस्तर पर सुलाया करता था वही पुत्र अब अपने कटु वचनों से उनके नेत्रों को भी गीला करने में संकोच नहीं कर रहा है। आज की पीढ़ी यह भूल रही है कि एक दिन उनको भी वृद्धावस्था का दंश झेलना पड़ेगा तब यदि उनके साथ ही ऐसा ही व्यवहार हुआ तो उन्हें कैसा लगेगा। तब क्या वे भी चाहेंगे कि उन्हें वृद्धाश्रमों की शरण लेनी पड़े, अथवा दर-दर की ठोकरें खानी पड़ें।

धर्मशास्त्रों का कथन है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है-"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" (श्रीमद्देवी भागवत पुराण 3/25/6)। पद्मपुराण में तो यहाँ तक कहा गया है कि जिस पुत्र पर माता-पिता को कोप रहता है उसे नरक में पड़ने से ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी भी नहीं बचा सकते। महर्षि शंख ने कहा है कि माता-पिता और गुरु मनुष्य के लिए सदा पूजनीय होते हैं। जो इन तीनों की सेवा-पूजा नहीं करता, उसकी सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं-

माता-पिता गुरुश्चैव पूजनीया: सदा नृणाम्।
क्रियास्तस्याफला: सर्वा यस्यैते नादृतास्त्रय:॥

(शंख स्मृति 3/3)

हमारी भारतीय संस्कृति का अतीत अति गौरवशाली रहा है। अतएव हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए अपने माता-पिता और गुरुजनों के प्रति सदैव सेवा और सम्मान का भाव बनाए रखें। हमारे देश में तो पितरों को भी जलदान किया जाता है और उनकी आत्मा की शांति के लिए कई प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान, श्राद्धादि भी किये जाते हें तो क्या जीवित माता-पिता की सेवा नहीं की जा सकती। कैसी विडम्बना है कि माँ-बाप अपने तीन चार बच्चों का विपन्नता में भी जैसे-जैसे पालन-पोषण कर ही लेते हैं। जबकि सारे बच्चे एक साथ मिलकर भी माता-पिता कि किन्चित सेवा नहीं कर पाते।

माता-पिता के पास जीवन के अनुभवों का अकूत खजाना होता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार सभी भरपूर अड़सठ तीर्थों का वास भी माता-पिता के श्रीचरणों में ही है। शास्त्र कहता है कि जो संतान अपने माता-पिता की सेवा करती है, उन्हीं किसी तीर्थादि के सेवन की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इन सबका लाभ हमें तभी मिल सकता है जब हम उन्हें प्रसन्नचित रखें, उन्हें समुचित महत्व दें, उनका मान-सम्मान करें, उनके परामर्श भी लें। उनको परिवार का महत्वपूर्ण सदस्य मानते हुए उनके विचारों को आदेश माने। वे इतनी सी सहभागिता एवं सहानुभुति दिखाने पर ही प्रसन्न हो जाएँगे और अपने आशीर्वाद का हाथ हमारे सिर पर बनाए रखेंगे।

माता-पिता एवं गुरुजनों की प्रसन्नता में ही हमारी प्रसन्नता और कल्याण निहित हैं, इस विचार को दृढ़ से दृढ़त्तर करने का सतत् प्रयास करना चाहिए।

वेदों-शास्त्रों का कथन है कि माता-पिता तथा गुरुजनों की उपेक्षा से ईश्वर नाराज होते हैं और इसका यथोचित दण्ड संतान को अपने जीवन में ही भुगतते हुए देखा जा सकता है। चाणक्य सूत्र में कहा गया है कि जो पुत्र सदैव अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, वे सदैव सुखी और प्रसन्न रहते हैं। इतना ही नहीं वृद्धजनों की सेवा करने से ही विनम्रता प्राप्त होती है-"विनयस्य मूलं वृद्धोपसेवा।" अथर्ववेद में कहा गया है-"अनुवृत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु संमना:" अर्थात् माता-पिता के आज्ञाकारी बनो।

-साभार हिन्दु सभा वार्ता

अन्धविश्वासों को छोड़िए: वैज्ञानिक-तार्किक जीवनशैली अपनाइए

- डॉ. संजय तेवतिया

अन्धविश्वास एक ऐसा विश्वास है, जिसका कोई उचित कारण नहीं होता है। एक छोटा बच्चा अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परम्पराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता आ रहा होता है, वह भी उन्हीं का अक्षरश: पालन करने लगता है। यह अन्धविश्वास उनके मन-मस्तिष्क में इतना गहरा असर छोड़ देता है कि जीवनभर वह इन अन्धविश्वासों से बाहर नहीं आ पाता। अन्धविश्वास अधिकतर कमजोर व्यक्तित्व, कमजोर मनोविज्ञान एवं कमजोर मानसिकता के लोगों में देखने को मिलता है। जीवन में असफल रहे लोग अधिकतर अन्धविश्वास में विश्वास रखने लगते हैं एवं ऐसा मानते हैं कि इन अन्धविश्वास को मानने एवं इन पर चलने से ही शायद वह सफल हो जाएँ। अन्धविश्वास न केवल अशिक्षित एवं निम्न आय वर्ग के लोगों में देखने को मिलता है, बलिक वर्ग के लोगों में देखने को मिलता है, बल्कि यह काफी शिक्षित, विद्वान, बौद्धिक, उच्च आय वर्ग एवं विकसित देशों के लोगों में भी कम या ज्यादा देखने को मिलता है। यह आमतौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिलते हैं। अन्धविश्वास समाज, देश, क्षेत्र, जाति एवं धर्म के हिसाब से अलग-अलग तरह के होते हैं। विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वास आमतौर पर समाज में देखने को मिलता है, जैसे आँख का फड़कना, घर से बाहर किसी काम से जाते समय किसी व्यक्ति द्वारा छींक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, 13 तारीख को पड़ने वाला शुक्रवार या 13 नवम्बर को अशुभ मानना, हथेली पर खुजली होना, काली बिल्ली में भूत-प्रेत का वास होना, बिल्ली में भूत-प्रेत का वास होना, परीक्षा देने जाने से पहले सफेद वस्तु जैसे दही आदि का सेवन करना, सीधे हाथ पर नीलकंठ नामक चिड़िया का दिखाई देना, सीढ़ी के नीचे से निकलना, मुँह देखने वाले शीशे का टूटना, घोड़े की नाल का मिलना, घर के अन्दर छतरी खोलना, लकड़ी पर दो बार खटखटाना, कन्धे के पीछे नमक फेंकना मासिक धर्म के दौरान महिला को अपवित्र मानकर उसके मन्दिर में प्रवेश को वर्जित करना, श्राद्ध के दिनों में नया काम शुरु न करना या नए कपड़े न सिलवाना आदि।

अन्धविश्वास सच्चाई और वास्तविकता से बहुत दूर होते हैं। अन्धविश्वास में व्यक्ति अलौकिक शक्तियों के अस्तित्व में विश्वास रखता है, जो प्रकृति के नियमों की पुष्टि नहीं करता है और न ही ब्रह्माण्ड की वैज्ञानिक समझ रखता है। अन्धविश्वास व्यापक रूप से फैला हुआ है। अलौकिक प्रभाव में तर्कहीन विश्वास होता है।

आँख के फड़कने के बारे में लोगों में यह अन्धविश्वास है कि पुरुष की सीधी आँख एवं महिला की उल्टी आँख का फड़कना शुभ होता है। वहीं इसका उल्टा होना अशुभ माना जाता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, इसे मसल फ्लीकरिंग कहते हैं, इसका कोई कारण अभी तक पता नहीं है एवं न ही इसका कोई उपचार है। आँख का फड़कना स्वत: ही बन्द हो जाता है। घर से बाहर किसी कार्य के लिए जाते समय, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा छींक देना भी एक अन्धविश्वास है। ऐसा होने पर व्यक्ति वहीं कुछ समय के लिए रूक जाता है एवं घर पर पानी पीकर या कुछ छोटा, मोटा खाकर ही दोबारा निकलता है। बिल्ली का रास्ता काट जाना भी अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि अगर बिल्ली किसी रास्ते को पार कर जाती है, तब दोनों तरफ के लोग रूककर खड़े हो जाते हैं एवं तब तक खड़े रहते हैं, जब तक कि कोई व्यक्ति या कोई वाहन उस रास्ते को पार न कर जाए। इस कारण कई बार सड़कों पर जाम तक लग जाता है। ऐसा कहा जाता है कि बिल्ली, शेर के परिवार से सम्बन्धित होती है। शेर, चीता एवं इस परिवार के जानवर जब कोई सड़क या रास्ता पार करते हैं, तब रास्ता पार करने के बाद रूककर, पीछे मुड़कर अपने शिकार की तरफ देखते हैं। इसी कारण पुराने समय में लोग जब तक शेर चला नहीं जाता था, तब तक उस रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते थे। कारण तो ये था, लेकिन अब यह अन्धविश्वास बन गया है। तेरह नम्बर या तेरह तारीख को अशुभ माना जाता है एवं अगर तेरह तारीख, शुक्रवार के दिन पड़ती है, तो इसे अत्यंत अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि होटल्स में तेरह नम्बर का कमरा या तेरहवाँ तल भी नहीं होता है, वहां पर बारह के बाद सीधे चौदहवाँ नम्बर होता है। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास है।

प्रजा के दुःख दर्द को समझने वाला राजा छत्रपति शिवाजी महाराज

- श्री कन्हैया लाल जी आर्य, गुरुग्राम

शिवाजी के नाम से कौन व्यक्ति परिचित नहीं। शिवाजी की वीरता की कहानियाँ घर-घर प्रचलित हैं। बहुत थोड़े काल में शिवाजी ने एक स्वाधीन राज्य की स्थापना करके स्वयं को 'छत्रपति' शासक घोषित कर दिया। हमारे प्राचीन ऋषियों के विचारानुसार उनमें दैवी अंश अवश्य था। हमें शिवाजी की उच्च-कोटि की वह योग्यता देखने को मिलती है जो पंजाब केसरी रणजीत सिंह से लेकर अब तक के अन्य किसी भी हिन्दू शासक में नहीं पाई जाती। शिवाजी का स्मरण आज भी नवीन स्फूर्ति संचारित करता है और उनका आदर्श भविष्य में भी हमारे नवयुवकों में नवीन आशा का संचार करता रहेगा। राजा तो अनेक हुए, परन्तु उन सभी राजाओं को इस प्रकार स्मरण नहीं किया जाता। उन राजाओं की जयन्ती अथवा पुण्यतिथि पर समारोह आयोजित नहीं किये जाते। अपवादस्वरूप किसी राज्य के किसी प्रदेश के कुछ निवासी ऐसा करते हों, परन्तु शिवाजी की जयन्ती जितने विस्तृत क्षेत्र में और अधिक अपार उत्साह, आशा और जोश के साथ मनायी जाती है, वैसी अन्य किसी राजा की नहीं।

शिवाजी के उत्थान के साथ ही आजकल के मराठों के जातीय जीवन का भी आरम्भ होता है। उन्होंने ही बलहीन, अप्रसिद्ध और बिखरे हुए लोगों को एकत्रित करके उन्हें शक्ति प्रदान की और उन्हें राष्ट्रीय एकता में गूँथकर आर्य (हिन्दुओं) के इतिहास में एक नई सृष्टि की रचना की। 'मराठा' जाति की जिस शाखा में शिवाजी का जन्म हुआ था, उसका कुल नाम 'भोंसले' था। सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में बहमनी साम्राज्य के टूटने के समय और उसके 100 वर्ष पश्चात् अहमदनगर के निजामशाही राजवंश के शीघ्र ही नष्ट हो जाने से मराठों को एक बड़ा भारी अवसर मिला। देश की राजनैतिक अवस्था के कारण मराठा खेतिहरों के बहुत से बलवान, चतुर और तीव्र पुरुषों ने हल छोड़कर तलवार पकड़ी और सैनिक व्यवसाय अपना लिया और वे जमींदार से राजा बनने लगे। एक कृषक का पुत्र किस प्रकार धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ अन्त में स्वतन्त्र राजा के पद को प्राप्त कर सकता है-इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं स्वयं शिवाजी।

जन्म एवं शिक्षा- शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 को माता जीजाबाई एवं पिता शाहजी के घर दूसरे पुत्र के रूप में हुआ। शिवाजी के जन्म से पहले जीजाबाई जुन्नर नगर के निकट शिवनेर के पहाड़ी किले में रहती थीं। माता जीजाबाई शिवाजी भवानी को अपनी आराध्य देवी मानती थीं। इस कारण इस पुत्र का नाम 'शिव' रखा, जो दक्षिणियों के उच्चारण के अनुसार 'शिवा' हो गया। मार्च 1936 तक शाहजी का परिवार शिवनेरी किले में रहा। अक्टूबर 1936 में शाहजी ने बीजापुर दरबार में नौकरी की। दरबार ने उन्हें चाकण से लेकर इन्द्रपुर और शिरबाल तक का प्रदेश जागीर रूप में दिया। शाहजी ने दादा कोंडदेव को जागीर का प्रबन्धक नियत किया और उनसे कहा, मेरी धर्मपत्नी जीजाबाई तथा मेरे पुत्र शिवाजी को अपने निरीक्षण में पूना में रखो। माता तथा पुत्र शाहजी से अलग रहने लगे। शिवाजी अकेला पिता के वात्सल्य प्रेम से वंचित हो पलने लगा। जीजाबाई उसके लिए सब कुछ थीं, वह उन्हें साक्षात् देवी की तरह पूजता था। शिवाजी के अक्षरज्ञान की शिक्षा के विषय में कोई स्पष्ट प्रबल प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु इस शिक्षण के न होने से उनका हृदय तथा मन भावहीन और जड़ नहीं रहे। श्री रामदास, श्री तुकाराम तथा मुसलमान फकीरों की सत्संगति ने उनके अन्दर उदात्त भावनाओं का संचार कर दिया था। माता जीजाबाई की धार्मिक और वैराग्य प्रधान सात्त्विक प्रवृत्तियों ने शिवाजी के हृदय को आदर्शवाद का पुजारी बना दिया। बाल्यकाल की इस शिक्षा ने उन्हें युवावस्था में अपने स्वीकृत पथ से विचलित न होने दिया।

कन्हैया लाल आर्य

शिवाजी और महिलाओं का सम्मान- शिवाजी के युग और सामन्तशाही के पूरे दौर में महिलाओं की प्रतिष्ठा विशेषकर निर्धन महिलाओं की प्रतिष्ठा का कोई मूल्य नहीं था। ऐसे युग में शिवाजी का दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न था।

रांझा के पटेल का प्रकरण प्रसिद्ध है। ग्राम-प्रमुख पटेल ने निर्धन कृषक की युवा पुत्री का दिन-दहाड़े अपहरण किया और उसे अपमानित किया। अपमानित

जीवन जीने की अपेक्षा उसने आत्महत्या कर ली। सारा ग्राम दु:खी हुआ, परन्तु सब चुप्पी साधे रहे। शिवाजी तक यह बात पहुँची। पटेल को पकड़कर पुणे लाया गया और उसके हाथ-पैर तुड़ा डाले। समस्त प्रजा आश्चर्य में डूब गई। निर्धन कन्या के सम्मान के लिए ठेकेदार पटेल को हुई कठोर सजा को देखकर प्रजा शिवाजी पर न्योछावर हो गई और प्रजा शिवाजी के कार्यों में सहयोग करने और उनके कार्यों की पूर्ति हेतु मरने-मारने को तैयार हो गई। राँझा के पटेल वाली घटना अपवाद नहीं है ऐसे और भी कई उदाहरण हैं-

(1) 1678 में सकूजी गायकवाड़ नाम के सेनापति ने बेलबाड़ी किले को घेर लिया। उस किले की किलेदार सावित्रीबाई देसाई नाम की महिला ने 24 दिन तक युद्ध किया, परन्तु अन्त में सकूजी ने किले पर विजय प्राप्त की और विजयोन्माद में तथा बदले की भावना से सावित्री बाई से बलात्कार किया। यह समाचार सुनकर शिवाजी क्रोधाग्नि में जल उठे। उन्होंने सकूजी गायकवाड़ की आँखें निकलवा कर उसे आजीवन जेल में डाल दिया। शत्रु महिला पर भी किये गये अत्याचार को न सहकर, शिवाजी ने मातृशक्ति के प्रति सम्मान का भाव प्रकट कर, मित्र एवं शत्रु की दृष्टि में राजमाता जीजाबाई के यश को दिग्दिगन्त में चिरस्थायी कर दिया।

(2) शिवाजी जी को समाचार मिला कि उसके पुत्र सम्भा जी ने एक ब्राह्मण विवाहिता देवी पर बलात्कार कर उसका सतीत्व नष्ट किया है। शिवाजी इससे पहले भी सम्भा जी की स्वेच्छाचारिता की बातें सुन चुके थे। इस बलात्कार की घटना ने शिवाजी के मन्यु को प्रदीप्त कर दिया। पितृमोह और राजकर्त्तव्य में से शिवाजी ने राजकर्त्तव्य पालन किया और सम्भा जी को पन्हाला के किले में नजरबन्द कर दिया। महाराणा प्रताप सिंह की भाँति शिवाजी को जीवनभर युद्धों में अपराजित होते हुए भी अन्त समय में पुत्र के भावी जीवन की चिन्ता के साथ राज्य की चिन्ता ने चिन्तित किया।

(3) कल्याण के सूबेदार की बहू को दरबार में प्रस्तुत किये जाने, उसके सम्बन्ध में अशोभनीय बातें न बोलकर और उसके साथ दुर्व्यवहार न करके उसे साड़ी-चूड़ी पहना कर वापिस भेजने की कथा तो कई रचनाओं की विषय-वस्तु बनी हुई है। मुसलमान शत्रु की युवा बहू को देखकर उन्हें अपनी माता का स्मरण हो आया, ''यदि मेरी माता जी भी इतनी सुन्दर होती तो क्या होता?'' ऐसे उद्गार प्रकट करने के लिए उज्ज्वल चरित्र और स्वस्थ सौन्दर्य बोध चाहिये जो शिवाजी में पूर्णतया से था।

युद्ध में अथवा लूटपाट के समय मुसलमान या हिन्दू महिला के सामने पडने पर उन्हें कोई हानि नहीं होनी चाहिये, ये आदेश शिवाजी ने दे रखे थे। युद्ध में जाते समय हिन्दू और मुसलमान राजे-रजवाड़े नाचने-गाने वालियाँ आदि साथ ले जाते थे। दूसरे प्रदेश की महिलाओं को गुलाम बनाने और उन्हें अपवित्र करने का चलन आम था। ऐसे समय में यह कठोर निर्देश जारी किया गया कि युद्ध पर कूच करते समय दासियों या नाचने-गाने वालियों को साथ ले जाना मना है तथा किसी भी महिला को दासी बनाया जाना सहन नहीं किया जायेगा। (यह वर्णन जे.एन. सरकार द्वारा अंग्रेजी में लिखित शिवाजी और उनका कालखण्ड के पृष्ठ 365 पर अंकित है। शिवाजी ने यथाशक्ति परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किये, परन्तु जहाँ तक उनके पारिवारिक जीवन का सम्बन्ध है, शिवाजी एक समय में बहुविवाह की प्रथा को न तोड़ सके। इसके अनेक कारण थे। यदि शिवाजी महाराज ने एक-पत्नीव्रत का पालन किया होता तो उनकी मृत्यु के पश्चात् छत्रपति का राजवंश घरेलू झगड़ों में न उलझता।

प्रजा की सम्पत्ति और शिवाजी- शिवाजी का प्रजा की सम्पत्ति से सम्बन्धित दृष्टिकोण भिन्न था। उस समय सेना जिधर से गुजरती थी, वहाँ पर परिश्रम से उगाई हुई दृषि को उजाड़ देती थी। ऐसे युग में शिवाजी ने सेना को आदेश दिये कि किसी भी युद्ध के दौरान सेना की कोई भी टुकड़ी कृषक की खड़ी फसल में से न गुजरे। उन्होंने आदेश दिया, 'प्रजा की सब्जी के डण्ठल तक को हाथ लगाना सहन नहीं किया जायेगा। यदि सेना के घोड़ों के लिए दाना-पानी की आवश्यकता हो तो नकद राशि देकर खरीदा जाना चाहिये।' यह वर्णन पी.एन. देशपाण्डे द्वारा लिखित छत्रपति शिवाजी महाराज के पत्र के पृष्ठ संख्या 117-118 पर अंकित है।

नौसेना खड़ी करने के काम में लकड़ी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उसके बिना नौसेना का लंगर डालना बहुत कठिन था। उस समय घने जंगल थे, वन की लकड़ी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी, परन्तु फिर भी यह आदेश दिया गया, स्वाधीन शासन में वर्तमान आम, कटहल के वृक्षों की लकड़ी उपयोगी है, परन्तु उन्हें हाथ न लगाने दिया जाये। कारण यह नहीं कि वृक्ष वर्ष दो वर्ष में तैयार होते हैं बल्कि इसके लिए प्रजा उनका सन्तान की तरह पालन-पोषण करती हैं और उनके काटने पर क्या उनके दु:ख की कोई सीमा होगी? हाँ, यदि कोई वृक्ष सूखकर ठूँठ बन गया हो तो भी उसके स्वामी को समझा-बुझाकर, उसका मूल्य चुका कर,

उसे सन्तुष्ट करके ही काटा जाना चाहिये। (यह वर्णन भी रामचन्द्र पन्त अमात्य द्वारा लिखित आज्ञा-पत्र जो कि श्री पी.एन. जोशी द्वारा सम्पादित है के पृष्ठ संख्या 434 पर अंकित है।)

प्रजा के सम्बन्ध में ऐसा अपनापन उस युग में किसी भी राजा या सामन्त द्वारा नहीं दिखलाया गया। प्रजा के प्रति राजा के ऐसे कार्य शिवाजी महाराज को सम्मानीय बना रहे थे तभी तो प्रजा अपने राजा शिवाजी महाराज के प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोगी रही और उनकी निष्ठा निराली थी।

शिवाजी धर्मानुरागी थे, धर्म-विद्वेषी नहीं- शिवाजी का युद्ध धर्मयुद्ध था, धर्म शिवाजी के कार्य का प्रेरणास्रोत रहा। शिवाजी धर्म के लिए लड़े, इसीलिए विजयी हुए। शिवाजी के कार्य का आधार यदि धर्म न होता तो उनका विजयी होना असम्भव था।

शिवाजी हिन्दू थे। उनकी धर्म में अटूट आस्था थी। एक आस्थावान् व्यक्ति के अनुरूप उनका आचरण था। धर्म और मन्दिरों के लिए दान-दक्षिणा देते थे और उनका व्यय वहन किया करते थे। राज्य में जहाँ-जहाँ देवमन्दिर थे, शिवाजी वहाँ नित्य पूजा-पाठ इत्यादि का प्रबन्ध करते थे, परन्तु वह इस्लाम के विरोधी भी नहीं थे। मुसलमान पीरों के स्थानों और मस्जिदों में उनकी आस्था अनुसार नियमानुसार धन की सहायता देते थे। उन्होंने बाबा याकूत नाम के एक पीर को भक्तिपूर्वक अपने व्यय से केलशी नामक नगर में बसाकर भूमिदान दी थी। और उस याकूत बाबा को अपना गुरु मानते थे। उन्होंने अपने जीवन में किसी मस्जिद को न तोड़ा और न ही उसे मन्दिर के रूप में परिवर्तित किया। इतिहास में शिवाजी महाराज का मुस्लिम धर्म सम्बन्धी उदार भाव कई प्रकार से दर्ज है। मुस्लिम इतिहासकार शाफीखान द्वारा लिखित निम्न उद्धरण स्वयं इनका प्रमाण हैं-

सेना के लिए शिवाजी ने कठोर नियम बनाये थे कि जहाँ-जहाँ सिपाहियों को लूट करने जाना हो, वहाँ-वहाँ मस्जिद, कुरान या किसी भी महिला को हानि या पीड़ा नहीं पहुँचनी चाहिये। यदि कुरान की प्रति मिलती तो नतमस्तक होकर उसे मुसलमान सेवक को सौंप देते थे। कभी भी हिन्दू या मुसलमान महिलायें हाथ आतीं और यदि उनकी सुरक्षा के लिए कोई उपलब्ध नहीं होता और उनको ले जाने के लिए जब तक उनके सम्बन्धी न आ जाते थे, उनकी रक्षा का दायित्व स्वयं संभालते थे।

शिवाजी स्वयं हिन्दू धर्मावलम्बी थे, परन्तु उन्होंने अपने राज्य के निवासियों का धर्म के आधार पर विभाजन नहीं किया और मुसलमानों से धर्म के आधार पर भिन्न व्यवहार नहीं किया।

वेद-प्रचार में सहयोग- प्रत्येक ग्राम के वेद-क्रिया में निपुण ब्राह्मणों के योगक्षेम के लिए विद्यावन्त, वेद-शास्त्र जानने वाले विद्वान् अनुष्ठानी, तपस्वी तथा सत्पुरुष ब्राह्मणों को चुन-चुनकर उनके परिवार की संख्या के अनुसार जितना अन्न-वस्त्र आवश्यक होता था, उसी के अनुकूल आय वाले स्थान गाँव-गाँव में दिये जाते थे। प्रत्येक वर्ष सरकारी अधिकारी यह सहायता उनके यहाँ पहुँचाते थे। चिटनीस बखर ने लिखा है-

''**लुप्त वेद**-चर्चा शिवाजी के अनुग्रह से फिर जाग उठी। जो ब्राह्मण विद्यार्थी एक वेद कण्ठस्थ करता था, उसे प्रत्येक वर्ष एक मन चावल, जो दो वेद कण्ठस्थ करता था, उसे दो मन, इस प्रकार दान होता था। प्रत्येक वर्ष उनके पण्डित राव श्रावण के मास में छात्रों की परीक्षा ले उनकी वृत्ति को घटा-बढ़ा देते थे। विदेशी पण्डितों को सामग्री और महाराष्ट्र के पण्डितों को खाने की वस्तुएँ दक्षिणा-स्वरूप दी जाती थीं। बड़े-बड़े पण्डितों को बुलाकर उनकी सभा करके उन्हें विदाई में नकद धन राशि दी जाती थी।''

अन्त समय की स्थिति- छत्रपति शिवाजी अपने बड़े पुत्र की दुश्चरिता और दुर्बुद्धि की बात सोचकर अपने राज्य और वंश के भविष्य के सम्बन्ध में बहुत हताश हो गये थे। अपनी मृत्यु के पश्चात् महाराष्ट्र राज्य की क्या दशा होगी, यह बात शिवाजी को स्पष्ट दिखाई दे रही थी। इसी चिन्ता ने उनकी आयु का ह्रास किया। उन्होंने अपना अन्त निकट देख लिया था और अपने निकट आये स्वजनों को कहा, ''जीवात्मा अविनाशी है। हम पृथ्वी पर फिर आयेंगे।'' यह कहकर चिरयात्रा को 3 अप्रैल 1680 को प्रस्थान कर गये। आर्यजाति के नवजीवनदाता कर्मक्षेत्र शून्य कर 53 वर्ष की आयु में वीर वाञ्छित धाम को चले गये।

छत्रपति शिवाजी ने आत्मबलिदान द्वारा आर्य जाति के सामने विजय का सन्देश रखा। आज मित्र व शत्रु शिवाजी की राजनैतिक कुशलता और मौलिकता का सिक्का मान रहे हैं। शिवाजी भारतीय जनता के प्रेरणास्रोत बन गये हैं। हम उज्ज्वल चरित्र प्रस्तुत करने वाले उस महामानव को शत शत नमन करते हैं और उनकी स्मृति को अमर बनाने के लिए हमें जनता की सेवा का व्रत धारण करना चाहिये।

उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

कभी ऐसा भी हुआ था पण्डित रामचन्द्र देहलवी

- सोमेश पाठक

किसी मेरू की वह दशा कि जो वर्षा ऋतु के अन्तराल होती है, महापुरुषों के धरती पर जीवन्त होने की दशा से मेल खाती प्रतीत होती है। वृक्षों की हरियाली अपने सौन्दर्य पर इठलाती है। झरनें फूटने लगते हैं और उनके गान कवियों के हृदयों में झंकृति पैदा करते हैं। सुप्त शब्द जो अब तक आकाश के अवकाश में अपना स्थान घेरे थे पूरे बल के साथ अपनी चेतना के प्रदर्शन में खड़े हो उठते हैं, और परिणाम यह कि काव्य निर्मित होता है। सारी प्रकृति उस काव्य का पाठ करती है। कलियाँ झूमती हैं, बदलियाँ नगमें गाती हैं। अहो रूपम् अहो ध्वनि। पर अफसोस! ऋतु का आना तो उसके जाने के लिए था। अब न कोई काव्य होगा और न गान। हर ओर शुष्कता का पहरा होगा। अब कवियों की लेखनी इतिहास के वीर थामेंगे और उनकी सारी शक्ति, सारा पुरुषार्थ इस बात को बताने में खर्च होगा कि 'कभी ऐसा भी हुआ था'

कहते हैं कि नीमच छावनी (मध्यप्रदेश) में सन् 1881 में रामनवमी के दिन मुंशी छोटेलाल जी के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। जन्म रामनवमी के दिन हुआ इसलिए पुत्र का नाम श्री रामचन्द्र रखा गया। यही रामचन्द्र आगे चलकर पं. रामचन्द्र देहलवी नाम से जाने गये। पण्डित जी की माता का नाम श्रीमती रामदेवी जी (रामदेई जी) था। पण्डित जी से पूर्व पैदा हुयी तीन सन्तानों की मृत्यु हो चुकी थी। इस कारण माता का पण्डित जी के प्रति विशेष स्नेह था। पर यह स्नेह लम्बे काल तक न चल सका। मात्र सात वर्ष की आयु में पण्डित जी को असहाय छोड़कर माता चिरनिद्रा में लीन हो गयीं। इसके बाद पिता ने पुनर्विवाह कर लिया।

पण्डित जी का प्रारम्भिक अध्ययन नीमच के ही एक प्राइमरी स्कूल में हुआ था। यहीं आपने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद आप अजमेर चले गये तथा डी.ए.वी. स्कूल से मिडिल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की तथा इन्दौर जाकर इन्दौर कॉलेज से एण्ट्रेन्स की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

18 वर्ष की अलपायु में ही पण्डित जी का विवाह हो गया। पण्डित जी की जीवनसंगिनी का नाम श्रीमती कमला देवी था। जो कि दिल्ली की रहने वाली थीं। गृहस्थ के उतार-चढ़ाव भरे मार्ग पर आर्थिक संकटों से जूझते हुये पण्डित जी आगे बढ़ने लगे। पण्डित जी को प्रथम संतान के रूप में एक पुत्री की प्राप्ति हुई। इसके बाद आप अपनी पुत्री व पत्नी को लेकर श्वसुर के पास दिल्ली चले गये। पण्डित जी के पाँच सन्तानें पैदा हुई, जिनमें चार पुत्रियाँ थीं और एक पुत्र। उनमें से तीन पुत्रियां ही जीवित बचीं थी। जब पण्डित जी के पुत्र की मृत्यु हुई तो श्रीमती कमला देवी जी को गहरा आघात लगा, जो कि स्वाभाविक है। वह पुत्र महज 18 दिन जीवित रहा इस धक्के के कारण वे रूग्ण रहने लगीं। और लगभग डेढ़ वर्ष अत्यन्त रूग्ण रहने के कारण उनकी भी जान पर आ बनी। इस समय पण्डित जी की आयु मात्र 36 वर्ष की थी, परन्तु उनके मस्तिष्क में पुनर्विवाह का ख्याल तक न आया।

इसके बाद पण्डित जी ने अपना जीवन धर्म के प्रचार में लगाना उचित समझा। इतिहास जानता है कि ऐसा ऊहावान् फिर कभी देखा न गया। आर्यसमाज में जब भी शास्त्रार्थ महारथियों की चर्चा होती है तो पण्डित रामचन्द्र देहलवी का नाम शीर्षस्थ पंक्ति में रखा जाता है। पण्डित जी वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् थे। साथ ही कुरान और बाइबिल पर भी असाधारण अधिकार रखते थे। विरोधी आपकी इस प्रतिभा को देखकर भौंचक्के रह जाते थे। पण्डित जी कमाल के वक्ता थे और कमाल के लेखक। अपने वक्तव्य में बड़े रोचक संस्मरण और हास्य चुटकियाँ लिया करते थे जिससे श्रोताओं में हँसी की लहर दौड़ जाती थी। यही हाल उनका शास्त्रार्थों में रहा करता था। एक बार उनका किसी मौलाना से शास्त्रार्थ हो रहा था। पण्डित जी ने मौलाना से पूछा, "आज कौन सा दिन है?" मौलाना बड़ी सहजता से बोले; "आज जुमेरात है।" इस पर पण्डित जी ने कहा, "मौलाना! मैं तो दिन पूछा रहा हूँ और आज रात बता रहे हैं।" इस बात पर श्रोता खिलखिलाकर हँस पड़े।

पण्डित जी प्रत्युत्पन्न मति थे। उनकी ऊहा और

पाण्डित्य की गहराई का पता लगा पाना मुश्किल था। एक समय की बात है, मुसलमानों से शास्त्रार्थ हो रहा था। पण्डित जी बोले, "आप लोग कोई एक तो ऐसा दृष्टान्त दें जिससे अभाव से भाव की उत्पत्ति सिद्ध हो सके।" इस पर मौलवी सईद साहब बोले, "आप दूसरा खुदा ला दीजिये। मैं नेस्ती (अभाव) से हस्ती (भाव) की मिसाल (उदाहरण) ला दूँगा।"

अब पण्डित जी की बारी थी। वे बोले, "आपका यह कहना कि मैं दूसरा खुदा खोजकर लाऊँ तो आप अभाव से भाव का उदाहरण ला देंगे, इसका क्या अर्थ निकला? यही ना! कि अभाव से भाव का होना ऐसा ही असम्भव है जैसा कि दूसरे सृष्टिकर्त्ता की सत्ता लाना अथवा बनाना।" ऐसी प्रतिभा थी पण्डित रामचन्द्र देहलवी की, कि विरोधी के शब्दों में ही उसका उत्तर दे देवें। आज ऐसे लोग खोजने से भी नहीं मिलते हैं। पण्डित जी सिर्फ विद्वान् व शास्त्रार्थ महारथी ही नहीं थे बल्कि कट्टर देशभक्त और क्रान्तिकारी भी थे। उन्होंने हैदराबाद-सत्याग्रह में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था। पण्डित जी सात बार हैदराबाद प्रचारार्थ गये। वहाँ उनके 124 व्याख्यान हुये। पं. नरेन्द्र जी जैसे क्रान्तिकारी भी पण्डित रामचन्द्र देहलवी की देन थे। पण्डित जी ने हजारों व्यक्तियों को धर्म-परिवर्तन से रोका है। अनेकों घटनायें हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है, परन्तु विस्तार भय के कारण हम ऐसा नहीं कर रहे हैं। पण्डित जी के विषय में विस्तृत जानकारी आदरणीय राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी ने उनकी जीवनी में लिपिबद्ध कर दी है। जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं कि ऋतु आती है जाने के लिए है। पण्डित जी दिल्ली के आर्यसमाज सदर बाजार जा रहे थे। पीछे से किसी टैसी वाले ने टक्कर मार दी। जिससे पण्डित जी रिक्शे से उछलकर दूर जा गिरे। उसी दुर्घटना में उन्हें बायें हाथ में कम्पन का रोग हो गया। वृद्ध हो गये थे, अतः दुर्बलता बढ़ती चली गयी और दुर्बलता के कारण रोग भी बढ़ता चला गया। शुरुआत में रोग का ठीक इलाज न करवाया गया और बाद में तो होता ही क्या? अन्ततोगत्वा रोग इतना भयंकर हो गया कि वे चल-फिर और उठ-बैठ भी न पाते थे। घर में जगह-जगह रस्सियाँ बँधवा लीं थीं। जिनके सहारे उठ-बैठ लिया करते थे। अन्तिम समय में पण्डित जी को उनकी इच्छानुसार दीवानहॉल लाया गया। यहीं पण्डित जी ने 2 फरवरी 1968 की रात को साढ़े नौ बजे नश्वर देह का परित्याग कर दिया और निकल पड़े अपनी अनन्त की यात्रा पर। बचा तो सिर्फ "शुष्कता का पहरा।" और छोड़ गये इतिहास वेत्ताओं को यह बताने का काम कि "कभी ऐसा भी हुआ था।"

-साभार परोपकारी

औषधीय गुणों से भरपूर बथुआ

-विवेक शुक्ला

सर्दियों में भारतीय शैली की भोजन थाली में बथुए का रायता स्वाद को उम्दा बना देता है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से सामान्य साग समझे जाने वाले बथुआ के बारे में अधिकांश लोगों को इसके औषधीय गुणों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।

विटामिन ए का स्रोतः बथुआ विटामिन एक का प्रमुख स्रोत है। एक शोध के अनुसार विटामिन ए की सर्वाधिक मात्रा बथुआ में पाई जाती है। इसके अलावा इसमें विटामन बी और सी भी पाया जाता है।

इम्यून सिस्टम करे मजबूतः- रोग प्रतिरोधक तंत्र (इम्यूंन सिस्टम) के कमजोर होने से कई रोग उत्पनन हो जाते हैं। बथुआ की सब्जी में सेंधा नमक मिलाकर, छाछ के साथ सेवन करें। इससे रोग से लड़ने की शक्ति मजबूत होती है।

त्वचा रोग में भी फायदेमंदः बथुआ त्वचा रोग दूर करने में भी सहायक है। अपने रक्तशोधक गुणों के कारण सफेद दाग, दाद, खुजली, फोड़े, कुष्ट आदि चर्म रोगों में नित्य बथुआ उबालकर, इसका रस पीने और तथा सब्जी खाने से लाभ होता है।

देश में लोगों की अस्वास्थ्यकर जीवन शैली के कारण पाचन तन्त्र से संबंधित रोग बढ़ रहे हैं। वहीं डायबिटीज जैसे रोगों के फलस्वरूप अधिकांश लोग कब्ज की समस्या से परेशान रहते हैं। बथुआ फाइबर का प्रमुख स्रोत है, जो पाचन तन्त्र से संबंधित रोगों जैसे कब्ज आदि को दूर करने में अत्यंत सहायक है।

ऋषिभक्त मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी थे। स्वाध्याय की उनको गहरी रूचि थी। ऐसा पढ़ने को मिलता है कि वह जिस पुस्तकालय में प्रविष्ट होते थे उसकी सभी पुस्तकों को देखकर ही बाहर आते थे। यह किंवदन्ती हो सकती है परन्तु उनका व्यक्तित्व इसको चरितार्थ करता हुआ प्रतीत होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने 26 वर्ष से भी कम आयु का जीवन पाया परन्तु उन्होंने इस छोटे से जीवन में जो महनीय कार्य किये हैं उसके कारण उनका आर्यसमाज के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। पंडित जी ने अनेक ग्रन्थ व लेख लिखे। पाश्चात्य विद्वानों की पक्षतापूर्ण वेदों की आलोचनाओं का उन्होंने सटीक खण्डन एवं सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रभावपूर्ण मण्डन किया। उनके ग्रन्थों का संग्रह पं. गुरुदत्त लेखावली के नाम से उपलब्ध होता है। आपके सभी ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा में लिखे गये। आपके ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद ऋषिभक्त सन्तराम जी, बी.ए. ने किया है। आर्ष संस्कृत के आप दीवाने थे और अपने घर पर ही संस्कृत पाठशाला का संचालन करते थे जिसमें लाहौर नगर के बड़े पदाधिकारी भी संस्कृत पढ़ते थे। वेदों की सहिताओं का भी आपने प्रकाशन किया था। अंग्रेजी में लिखा 'टर्मिनोलोजी आफ वेदाज' आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है जिसे आक्सफोर्ड में संस्कृत पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया था। इसका हिन्दी अनुवाद वैदिक संज्ञा विज्ञान के नाम से उपलब्ध होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के ग्रन्थों का अंग्रेजी में सम्पादन ऋषिभक्त डॉ. राम प्रकाश, कुरुक्षेत्र ने किया है। आपने पंडित जी की अनुसंधानपूर्ण जीवनी भी प्रकाशित की है। यह भी बता दें कि पण्डित जी विज्ञान के अध्ययन से नास्तिक हो चुके थे। आर्यसमाज लाहौर से जुड़े होने के कारण ऋषि की अक्टूबर 1883 में मृत्यु के अवसर पर आपको श्री जीवन दास जी के साथ लाहौर से अजमेर भेजा गया था। अनेक शारीरिक पीड़ाओं के होते हुए भी आपने ऋषि दयानन्द को अजमेर में पूर्ण शान्त एवं ईश्वर भक्ति से भरा हुआ देखा था। भयंकर रोग की स्थिति में शान्त रहना किसी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं था परन्तु किसी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं था परन्तु ऋषि ने ईश्वर के सहारे इसे कर दिखाया था। पंडित गुरुदत्त जी ने स्वामी जी के प्राण त्याग का दृश्य भी एकाग्रता से देखा था। इस अन्तिम दृश्य से उन्हें आत्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई और एक चमत्कार हुआ जिससे पंडित जी का नास्तिक मन व आत्मा आस्तिक बन गये थे।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी का जन्म 26 अप्रैल सन् 1864 को मुलतान नगर (पाकिस्तान) में पिता श्री रामकृष्ण जी के यहां हुआ था। पंडित जी ने एम.ए. परीक्षा में पंजाब में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन दिनों पूरा पाकिस्तान, भारत का पंजाब प्रान्त, हरियाणा व दिल्ली के कुछ क्षेत्र पंजाब में होते थे। इससे पंडित जी की प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। आप 20 जून सन् 1880 को आर्यसमाज लाहौर के सभासद बने थे। पंडित जी ने ऋषि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया था और इसके धनसंग्रह करने के लिए वह देश के अनेक भागों में गये थे जबकि उनके पिता रोग शैय्या पर थे। पंडित जी की वाणी में ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति जो समर्पण था उससे आपकी अपील पर जनता मन्त्रमुग्ध होकर अधिकाधिक धनराशि व स्वर्णाभूषण दान देती थी। डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज, लाहौर स्थापित हुआ परन्तु पंडित जी की भावना के अनुसार वेदों व वैदिक साहित्य के अध्ययन को वह प्राथमिकता नहीं मिली जो पंडित जी चाहते थे। दिनांक 19 मार्च सन् 1890 को मात्र 26 वर्ष की अल्पायु में आपका क्षय रोग से पीड़ि.त होकर निधन हो गया। पं. गुरुदत्त जी ने अपने अल्पजीवन में जो धर्म प्रचार का कार्य किया उसके कारण वैदिक धर्म और आर्यसमाज के इतिहास में उनका नाम सदैव अमर रहेगी।

ऋषि दयानन्द के अनुसंधानपूर्ण जीवन चरित के लेखक एवं धर्मरक्षक पं. लेखराम आर्यपथिक

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त थे। आपने अपना जीवन वैदिक धर्म की रक्षा व प्रचार सहित अपने धर्मगुरु महर्षि दयानन्द जी के लिए समर्पित किया था। वेद-धर्म प्रचार, शुद्धि, स्वबन्धुओं की धर्मान्तरण से रक्षा तथा ऋषि जीवन का अनुसंधानपूर्ण अतीव महत्वपूर्ण बृहद् जीवन चरित्र लिखकर आपने सभी ऋषिभक्तों को सदा-सदा के लिए अपना कृतज्ञ बना दिया है। धर्मरक्षा करते हुए आप किसी षड्यन्त्र का शिकार होकर एक आततायी मुस्लिम युवक के चाकू द्वारा हमले के कारण धर्म की वेदि पर बलिदान हुए। यह युवक विश्वासघाती था। इसने पं. लेखराम जी से आर्य बनने की प्रार्थना की थी। लोगों के सावधान करने पर भी पंडित जी ने इस क्रूर व्यक्ति को अपने निकट रखा था। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद पंडित जी का बलिदान आर्यसमाज की एक बहुत बड़ी क्षति थी। पं. लेखराम जी का जन्म पंजाब के जिला जेहलम की तहसील चकवाल के ग्राम सैदपुर में चैत्र 8 सं. 1915 (सन् 1858) को हुआ था। श्री तारासिंह जी आपके पिता तथा श्रीमती भागभरी जी आपकी पूज्य माताजी थी। धन्य हैं यह माता-पिता जिन्होंने सनातन वैदिक धर्म पर मर-मिटने वाली बलिदानी सन्तान पं. लेखराम जी को जन्म दियाथा। पंडित जी ने फारसी की शिक्षा प्राप्त कर पुलिस की नौकरी प्राप्त की थी और उन्नति कर सार्जेण्ट के पद पर पदोन्नत हुए थे। आप आरम्भ में नवीन वेदान्त से आकर्षित हुए परन्तु समाज सुधारक मुंशी कन्हैया लाल अलखधारी की पुस्तकों का अध्ययन करने पर आपको ऋषि दयानन्द व उनके विचारों का ज्ञान हुआ। आप उनसे मिलने और शंका समाधान करने सन् 1881 में अजमेर भी पहुंचे थे और अपनी सभी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया था। इससे पूर्व सन् 1880 में आपने पेशावर आर्यसमाज की स्थापना की थी और समाज से सहयोग से धर्मोपदेश नामक एक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। धर्म प्रचार की तीव्र लगन के कारण आपने पुलिस की सेवा से त्याग पत्र देकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत पूर्ण समय धर्म प्रचार का कार्य किया। आपने उपदेशक बनकर देश के अनेक भागों में जाकर वेदों व ऋषि दयानन्द के सन्देश को धर्म प्रेमी लोगों में प्रसारित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र की खोज और उसके लेखन के प्रस्ताव को आपने स्वीकार किया था और प्रायः उन सभी स्थानों पर गये थे जहां ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में प्रचार यात्रायें की थीं। आपके द्वारा सम्पादित यह जीवन चरित्र पूर्ण प्रामाणिक एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। हम कल्पना कर सकते है कि यदि पं. लेखराम जी ने इस कार्य को हाथ में न लिया होता तो आर्यसमाज ऋषि जीवन की अनेक घटनाओं को जानने से वंचित हो सकता था जिनकी खोज पंडित जी ने अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर की थी। पंडित जी में ईसाई व मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने की योग्यता भी विद्यमान थी और अनेक अवसरों पर आपने इनसे शास्त्रार्थ किये। पं. जी का मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय के आचार्यों से विवाद होता रहता था। 6 मार्च सन् 1897 को एक आततायी मुसलमान ने पं. लेखराम जी का वध कर उन्हें वैदिक धर्म का रक्तसाक्षी बलिदानी बना दिया। बलिदान के समय पंडित जी 39 वर्ष के थे। उनके परिवार में उनकी माता जी एवं पत्नी माता लक्ष्मी देवी जी ही थी। पंडित जी के एक मात्र पुत्र सुखदेव की शैशवकाल में ही मृत्यु हो गयी थी। पं. जी ने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की है। उनके सभी ग्रन्थ उूर्द में लिखे गये हैं जिनका हिन्दी अनुवाद हो चुका है और सम्प्रति कुछ प्रमुख ग्रन्थ 'कुलियात आर्य मुसाफिर' में उपलब्ध होते हैं। इस ग्रन्थ का नवीन संस्करण प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी से सम्पादित होकर कुछ माह पूर्व परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाश में लाया गया है। दूसरा अन्तिम खण्ड भी प्रकाशित हो चुका है। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने पं. जी की अनेक जीवनियां लिखी हैं। 'रक्तसाक्षी पं. लेखराम' प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी लिखित उनकी बृहद् जीवनी है।

नवीन संवत्सर मंगलमय हो

– स्वामी मंगलतीर्थ

मुनयो मनीषिणस्तत्र सज्ज्ञान परिपुष्टये।
आययुर्दूरदेशेभ्यस्तथा निश्रित्य शोभनम्॥

ओ३म्-ओ३म् हमारे वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है। इसलिए इसको संवत्सर प्रतिपदा कहते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में लिखा है कि ब्रह्मा ने आज के दिन ही सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी।

चैत्रमासि जगत् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रं तु तथा सूर्योदये सति॥

अर्थात् ''चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की।'' इसी दिन भगवान् के मत्स्यावतार का आविर्भाव हुआ था। सतयुग का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था और भारतवर्ष के सार्वभौम सम्राट् विक्रमादित्य के संवत् का प्रथम दिन भी यही है। नवीन संवत्सर का उत्सव प्रत्येक देश में मनाया जाता है। ईसाइयों में पहली जनवरी को 'न्यू इयर्स डे' का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। फारस देश के निवाली पारसियों के यहां सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के दिन 'जश्न-नौरोज' बड़ी धूमधाम से होता है। अन्य जातियों में भी इसी से मिलती-जुलती प्रथाएं हैं, इसलिए स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारतवर्ष में इस प्रकार का सार्वजनिक उत्सव अवश्य मनाया जाना चाहिए। भारतवर्ष में केवल हिन्दू ही नहीं रहते, वरन् मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध और भी अनेक मजहबों के व्यक्ति बड़ी संख्या में बसते हैं। हिन्दुओं के अन्य त्यौहारों में तो उनके विशेष धार्मिक विधान सम्पन्न किये जाते हैं, किसी न किसी देवता का पूजन होता है, तीर्थस्नान, दान, वेदपाठ आदि का भी नियम पालन करना होता है। परन्तु नवीन संवत्सर के उत्सव में कोई नियम अनिवार्य नहीं है। इसको प्रत्येक धर्म का व्यक्ति, जो अपने को भारतीय समझते हैं, अपनी-अपनी रूचि के अनुसार मना सकते हैं। हिन्दू अपने मन्दिरों में भगवान् की पूजा और वेदपाठ करके, मुसलमान भाई अपनी मस्जिदों में नमाज पढ़कर और कुरान का पाठ करके, ईसाई भाई अपने गिरजे में ईश प्रार्थना और बाइबिल सम्बन्धी प्रवचन सुनकर इसको मना सकते हैं। इसके संबंध में यह ऐतराज करना कि हिन्दू शास्त्रों में इसका निषेध है, ठीक नहीं। जब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सब कोई अंग्रेजी अमलदारी में बिना किसी ऐतराज के एक जनवरी को 'नववर्ष' की छुट्टी मना लेते थे और बहुत से नई रोशनी के व्यक्ति उसमें प्रत्यक्ष रूप से भाग भी लेते थे, तो कोई कारण नहीं जो हम चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को 'नये साल' का उत्सव मनाने में ऐतराज करें।

ओ३म् खेद का विषय है कि अनेक वर्षों से भारत वासियों में राष्ट्रीयता और एकता की भावना का अधिकांश में लोप हो गया है और उसका स्थान संकीर्णता ने ले लिया है। एक देश में अनेक धार्मिक विश्वासों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विशेषतः भारतवासी तो इस विषय में आरम्भ से ही सबसे अधिक उदार और अग्रसर रहे हैं। जहां ईसाई और मुसलमान देशों में धार्मिक विश्वासों में शंका और तर्क करने वालों को प्राणदण्ड दिया गया है, भारतवर्ष के धार्मिक क्षेत्र में घोर आस्तिक से घोर नास्तिक तक, अव्वल दर्जे की छुआछूत वाले से लेकर सरभंगी तक, पेड़ और सांपों की पूजा करने वालों से लेकर निराकार सर्वव्यापी ब्रह्म की उपासना करने वाले तक सभी लोगों के सदा स्थान मिला है। ईसाई मत को अब तक यूरोप में स्वीकार नहीं किया और जिस समय ईसाईयों पर अत्याचार जारी थे, उसी समय दक्षिण भारत के कोचीन, मालावार आदि प्रदेशों में उनका स्वागत बन्धुरूप में किया गया। जहां आज भी 1600 वर्ष से अधिक प्राचीन गिरजाघर मौजूद हैं। इसी प्रकार मुसलमान आक्रमणकारियों के आगमन से बहु पूर्व यहां

इस्लाम मजहब वालों को भी भाई के समान स्थान दिया गया था।

ओ३म् सारांश यह है कि हिन्दू जाति धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में सदा से उदार रही है और उसका यह सिद्धान्त रहा है कि मानव प्रकृति के विकास को देखते हुए भिन्न-भिन्न दर्जे के मनुष्यों के लिए पृथक-पृथक पूजा और उपासना की विधि होना असंगत नहीं वरन् स्वाभाविक ही है। गांव का एक साधारण किसान भगवान् की मूर्ति पर दो-चार फूल चढ़ाकर और टूटी-फूटी भाषा में ही स्तुति करके शान्ति पा सकता है, जबकि एक योगी या संन्यासी को निर्विकल्प समाधि ही मुक्ति का मार्ग जान पड़ती है। इसी प्रकार वह सब मजहबों को भी भिन्न-भिन्न रूचियों के मनुष्यों को उचित मानता है। इन्हीं उच्च आदर्श विचारों के कारण भारतवर्ष पहले 'मानव द्वीप' के नाम से जाना जाता था। यहां मानवता को ही महत्त्व दिया जाता रहा है। अस्तु।

ऐसी दशा में हमको कोई कारण नहीं जान पड़ता कि इस देश के निवासी धार्मिक मत-मतान्तरों के आधार पर आपस में अनैक्य रखें। ओ३म हमारा कर्त्तव्य है कि कुछ समय से अज्ञानवश लोगों में जो संकीर्णता का भाव उत्पन्न हो गया है, उसे मिटाने के लिए सार्वजनिक त्यौहारों और उत्सवों की योजना करें। जैसे 26 जनवरी और 15 अगस्त के उत्सव राष्ट्र भर के लिए माननीय समझे जाते हैं और सब कोई उनमें बिना भेदभाव के भाग लेते हैं, उसी प्रकार नव वर्षोरम्भ का उत्सव हमको ऐसे रूप में मानना चाहिए, जिससे वह किसी एक जाति या सम्प्रदाय का न रहकर सार्वजनिक जान पड़े। वैसे हिन्दू मात्र उस दिन को नवरात्रि का प्रथम दिन होने के कारण मनाते ही हैं। उस दिन उपवास रखकर हवन आदि कृत्य करते हैं और अनेक इसका कोई महत्त्व भी अनुभव नहीं करते। इसलिए अब यदि भारतीय नववर्ष के उत्सव का प्रचार एक सार्वजनिक त्यौहार के रूप में किया जाए तो उससे विविध सम्प्रदायों एवं मत-मतान्तरों के समन्वय में उल्लेखनीय सहायता मिल सकती है। आज सुखशान्ति आनन्द पाने के लिए हर क्षेत्र में समन्वय की आवश्यकता महसूस हो रही है।

भारतीय नरेश विक्रमादित्य की कीर्ति को स्थायी और समुज्जवल बनाने में सहयोग दें। यह प्रतिपदा सब पापों को नष्ट करने वाली, आयु को बढ़ाने वाली और सौभाग्यदायिनी है।

राष्ट्र और समाज की सर्वांगीण विकास के लिए देश में बसने वाले विभिन्न समुदायों और सम्प्रदायों का समन्वय और पारस्परिक सद्भावना अनिवार्य है। जहाँ के निवासी आपस में वैमनस्य अथवा उदासीनता का भाव रखने वाले होंगे, वह समाज कभी सुदृढ़ और शक्तिशाली न होगा। नवीन संवत्सर का त्यौहार देश के सभी वर्गों और सम्प्रदायों को एक संगठन के सूत्र में आबद्ध करने वाला है। अतः एवं इसका समारोह पूर्वक मनाना प्रत्येक भारतवासी का पवित्र कर्त्तव्य है। नवीन वर्ष मंगलमय हो। सभी को सुख शान्ति आनन्द मिले। यही शुभकामना है हमारी।

-साभार शुद्धि समाचार

गीत

आगत का स्वागत अभिनन्दन,
और विगत की करें विदाई।
नवसंवत् की बेला आई॥

नवल विचार-नवल कल्पना,
नवल रंगोली-नवल कल्पना,
नवल योजना-नव आशाएं,
नवल वर्ष मिल सभी मनाएं,
चेहरों पर आई अरूणाई।
नवसंवत् की बेला आई।

नव उल्लास, नवल उमंगें,
नवल नवल नवीन तरंगे,
नव उत्साह नवल आयोजन,
नवल मंच नवल संयोजन,
झूम उठे जिसमें तरूणाई।
नवसंवत् की बेला आई।

नव आगत का स्वागत प्यारे,
नव आशाएं भविष्य संवारे,
कोई कार्य रहे न असम्भव,
मंगलकारी हो ये वर्ष नव,
पल-पल हो इसका सुखदाई।
नवसंवत् की बेला आई।

- डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का आदर्श एवं प्रेरणादायक जीवन

- मनमोहन कुमार आर्य

आर्यावर्त वा भारतवर्ष में प्राचीन काल से अध्यात्म का प्रभाव रहा है। सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने चार ऋषियों के माध्यम से वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे उन ऋषियों व बाद में ऋषि परम्परा ने इस ज्ञान को सुरक्षित रखा जिस कारण आज भी वेद संहिताओं व वेद का ज्ञान सर्वसाधारण के लिये सुलभ है। यह बात और है कि कौन उससे लाभ उठाता है या नहीं। महाभारत काल के बाद वेदों में अनेक प्रकार की विकृतियां की गई थी। इसी कारण समाज में भी विकृतियां फैल गई और वैदिक धर्मी लोग धर्म के मर्म को भूल कर पांखण्डी और अन्धविश्वासी बन गये। इसका परिणाम भारत में छोटे छोटे राज्य बने, सामाजिक विकृतियां उत्पन्न हुई तथा धर्म में सत्याचार के स्थान पर अज्ञान पर आधारित मिथ्याचार व स्वार्थ आदि की परम्पराओं में वृद्धि हुई। ऐसे समय में बाल्मीकि रामायण में भी प्रक्षेप हुए। रामायण वा राम के सम्बन्ध में अनेक मिथ्या किम्वदन्तियां प्रचलित हुई और अवतारवाद आदि सम्बन्धी अनेक अविश्वसीय कथाओं को भी रामायण में जोड़ दिया गया। महात्मा बुद्ध के बाद व कुछ शताब्दी पूर्व भारत में पुराणों की रचना हुई जिसमें ज्ञान व विज्ञान की उपेक्षा कर अनेक अज्ञान से शुद्र बातों का प्रचार हुआ। रामायण का कुछ प्रभाव भी भारतीयों में रहा। यवनों की पराधीनता के काल में तुलसीदास जी उत्पन्न हुए जिन्होंने लोक-भाषा अवधि वा हिन्दी में काव्यमय रामचरित मानस की रचना की। इससे पूर्व धर्म व मत सम्बन्धी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में थे। राम-चरित-मानस के लोक भाषा में होने के कारण इसका जन-जन में प्रचार हुआ। इसका कारण मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उज्जवल प्रेरणादायक चरित्र था। यदि कोई मनुष्य राम का जीवन चरित जान ले और उसके अनुसार आचरण करें तो वह मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की सफलताओं को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने सभी शास्त्रीय एवं इतिहास ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने पुराणों की परीक्षा भी की थी। ऋषि दयानन्द ने पाया कि रामचन्द्र जी का जीवन वैदिक मान्यताओं के आधार पर व्यतीत हुआ था। एक क्षत्रिय राजा व राजकुमार का जीवन जैसा होना चाहिये वैसा ही आदर्श एवं मर्यादा में बन्धा हआ जीवन रामचन्द्र जी का था। अतः ऋषि दयानन्द ने वेदों को जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से अखिल-धर्म का मूल हैं, उसका प्रचार-प्रसार किया और साथ ही वेद की मान्यताओं पर आाधारित अपने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की रचना भी की। राम के जीवन में हम एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श राजा, आदर्श मित्र, आदर्श शत्रु, ईश्वर भक्त, वेदानुयायी, ब्रह्मचर्य के पालक, प्रजा पालक, भक्त वत्सल, आदर्श पति, तपस्वी, धर्म पालक, ऋषि व धर्म के रक्षक आदि अनेक रूपों व गुणों को पाते हैं। यदि हम रामचन्द्र जी के इन गुणों को अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा कल्याण हो सकता है। यही कारण था कि लाखों वर्ष पूर्व उत्पन्न राम व उनके रावण के साथ युद्ध आदि की घटनाओं पर आधारित बाल्मीकि रामायण व राम चरित मानस ग्रन्थों ने देशवासियों के हृदय पर अपनी अमिट छाप बनाई। आज भी रामायण व इस पर आधारित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन किया जाता है। रामचन्द्र जी के जीवन से वर्तमान समय में भी लोग अपनी घरेलू व राजनीति की समस्याओं के समाधान ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। महर्षि दयानन्द ने बाल्मीकि रामायण को इतिहास का ग्रन्थ स्वीकार कर इसके विश्वसनीय, सृष्टिक्रम के अनुकूल तथा वेदानुकूल भाग का अध्ययन करने का विधान वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में किया है।

आर्यसमाज में अनेक विद्वानों ने रामायण पर कार्य किया और उसका मन्थन कर उसका वेदानुकूल व विश्वसीय इतिहास सम्बन्धी भाग श्लोकों के हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किया है। वर्तमान में आर्यसमाज में पं. आर्यमुनि, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा महात्मा प्रेमभिक्षु बाल्मीकि रामायण पर आधारित ग्रन्थों का विशेष प्रचार है। हमारे पास यह सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं तथा रामायण पर कुछ अन्य आर्य विद्वानों के अनुवाद व ग्रन्थ उपलब्ध हैं। हमने स्वामी

जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी की बाल्मीकि रामायण को आद्योपान्त पढ़ा है। यह ग्रन्थ पढ़ने योग्य है। इसमें प्रक्षिप्त भाग को हटाकर रामायण को रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़ने से पाठक को रामचन्द्र जी विषयक प्राय: पूर्ण इतिहास का ज्ञान होता है। यह ग्रन्थ यद्यपि एक वृहद ग्रन्थ है परन्तु गीता प्रेस की बाल्मीकि रामायण की तुलना में काफी छोटा है। इसे कुछ ही दिनों में पढ़ा जा सकता है। इसे पढ़ने से रामायण का लगभग पूर्ण ज्ञान हो जाता है जितना ज्ञान किसी मनुष्य के लिये आवश्यक है। हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक परिवार में यह ग्रन्थ होना चाहिये और सबको इसका तन्मयता से पाठ करना चाहिये।

राम चन्द्र जी की शिक्षा-दीक्षा ऋषियों के सान्निध्य में हुई थी जहां वेदाध्ययन सहित उन्हें क्षत्रिय धर्म की शिक्षा भी दी जाती थी। राम व लक्ष्मण ऋषियों के सान्निध्य में सन्ध्या व यज्ञ करते थे तथा अपने कर्तव्यों सहित शस्त्र संचालन एवं वेदज्ञान प्राप्त करते थे। रामायण के अनुसार रामचन्द्र जी का स्वरूप व व्यक्तित्व अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, प्रभावशाली एवं विद्या व सदाचार से परिपूर्ण था। वह माता, पिता तथा आचार्यों के आज्ञाकारी व सेवक तो थे ही साथ ही अपने भाईयों के प्रति भी उनका व्यवहार वेद व शास्त्रों की मर्यादाओं के अनुसार था। प्रजा भी उनके व्यक्तित्व एवं व्यवहार से प्रभावित व उन पर मुग्ध थी। रामचन्द्र जी ऋषि विश्वामित्र के साथ वन में रहे और उनसे अध्ययन किया। वनों में ऋषियों के अनेक आश्रम थे जहां ऋषि-मुनि-विद्वान-वानप्रस्थी व संन्यासी वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए शोध, अनुसंधान एव शस्त्र विज्ञान सहित आयुद्ध निर्माण का कार्य किया करते थे। लंका का राजा रावण इन ऋषियों के कार्यों के प्रति आजकल के आतंकवादियों के स्वभाव वाला था तथा निर्दोष और ईश्वर भक्ति में मग्न ऋषियों व उनके आश्रम में निवास करने वाले विद्यार्थियों पर अत्याचार करता था। बहुत से ऋषि व विद्वान इस कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त होते थे। अत: रामचन्द्र जी के वहां होने से उन्होंने ऋषियों को कष्ट देने वाले अनेक राक्षसों का वध किया था। एक राजा व राजकुमार होने के कारण उन्हें दोषी व अपराधी प्रवृत्ति के दुष्ट लोगों को दण्ड देने का पूर्ण अधिकार था।

रामचन्द्र जी ने गुरु विश्वामित्र जी के साथ राजा जनक की नगरी मिथिलापुरी में सीता के स्वयंवर में प्रवेश किया था और वहां एक प्राचीन भारी धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए उसे तोड़ डाला था। इस धनुष पर अन्य राजा प्रत्यंचा नहीं चढ़ा सके थे। यह राम की वीरता व पराक्रम का आरम्भ था। सीता से विवाह कर आप अयोध्या आये थे। कुछ दिन बाद आपके राज्याभिषेक का निर्णय आपके पिता दशरथ व मंत्री परिषद ने लिया था। पारिवारिक व देश की परिस्थितियों के कारण आपको अगले ही दिन 14 वर्ष के लिये वन जाना पड़ा। बाल्मीकि रामायण ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है 'आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोप्याकारविभ्रम:।।' इसका अर्थ है कि राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिये विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में ऋषि बाल्मीकि जी ने कुछ भी अन्तर नहीं देखा। कहां तो रामचन्द्र जी को राजा बनना था और कहां अगले ही दिन उन्हें सभी राजकीय सुख-सुविधाओं का त्याग कर वन जाने को कहा गया। इस पर भी वह इन घटनाओं से किंचित विचलित हुए बिना पिता की आज्ञा पालन करने के लिए सहर्ष वन जाने के लिये तैयार हो गये। विश्व इतिहास में ऐसी घटना दूसरी नहीं है। आज राजनीति का स्तर कितना गिर गया है वह प्राय: सभी राजनीतिक नेताओं व उनके अनुचरों के दिन प्रतिदिन के बयानों से देखा व जाना जा सकता है। वह देश के हितों की उपेक्षा करने से भी गुरेज नहीं करते। दूसरी ओर राजा बनाने की घोषणा सुनकर भी राम के चेहरे पर प्रसन्नता का भाव नहीं देखा गया और वन जाने के लिये कहने पर भी उनके मुख पर किसी प्रकार के दु:ख या चिन्ता का भाव नहीं था। यह स्थिति एक बहुत उच्च कोटि के योग साधक वा ईश्वर भक्त की ही हो सकती है। इससे रामचन्द्र जी के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है जो कि आदर्श है। इससे शिक्षा लेकर हम भी सुख व दु:ख की स्थिति में स्वयं को समभाव वाला बनाकर जीवन को ऊंचा उठा सकते हैं। रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन करते हुए आर्य विद्वान श्री भवानी प्रसाद जी ने लिखा है 'वस्तुत:

दशरथनन्दन राम स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रतनिरत पति, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृददुः खविमोचक, मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार मर्यादा-व्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीभ्रत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौशल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज आदि गुणों से युक्त थे।' यह सभी गुण अन्य कहीं किसी मानव में मिलना दुर्लभ है।

रामायण के सुग्रीव-हनुमान मित्रता, बालीवध, सुग्रीव को राजा बनाना, बाली के पुत्र अंगद को अपने साथ रखना, प्राणपण से ऋषि-मुनियों की रक्षा तथा राक्षसों का नाश करना, रावण को अपने दूतों द्वारा समझाना और सीता को लौटाने का सन्देश देना, रावण के भाई विभीषण को शरण देना और रावण के वध के बाद उन्हीं को लंका का राजा बनाना, 14 वर्ष बाद अयोध्या लौटकर भरत के आग्रह पर राजा बनना और अपनी तीनों माताओं को समानरूप से सम्मान देना, एक आदर्श राजा व पिता के रूप में प्रजा का पालन करना रामचन्द्र जी को एक आदर्श मनुष्य व पुरुषोत्तम बनाते हैं। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी है। इसी कारण मध्यकालीन अल्पज्ञानी लोगों ने वेदों से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें परमात्मा के समान पूजनीय स्वीकार किया और आज तक भी उनका यश कायम है। करोड़ो लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेते आये हैं व अब भी ले रहे हैं। यदि इतिहास में उपलब्ध सभी जन्म लेने वाले महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डालें तो रामचन्द्र जी के जैसा महापुरुष विश्व इतिहास में दूसरा उपलब्ध नहीं होता। आज भी रामचन्द्र जी का जीवन प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है। हमें बाल्मीकि रामायण का अध्ययन करने के साथ रामचन्द्र जी के गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करना चाहिये। इसी से हमारा जीवन सार्थक होगा। रामनवमी रामचन्द्र जी का जन्म दिवस है। इस दिन हमें उनके जीवन पर किसी वैदिक विद्वान की कथा व प्रवचन सुनना चाहिये और उससे लाभ उठाना चाहिये।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

बाल-बोध खण्ड

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **पुलिस अफसर**-जब मैं जंगल में अकेला जा रहा था तो मुझे दो डाकु मिले और मेरी घड़ी रूपया और माल सब कुछ ले गये।
  हवलदार-लेकिन आपके पास तो पिस्तौल भी था
  अफसर-हां था तो लेकिन उसपर उनकी नजर नहीं पड़ी।
- **नरेश** को चिड़ियाघर में नौकरी मिली उसने शेर के पिंजरे को ताला नहीं लगाया।
  मैनेजर-तुमने शेर के पिंजरे को ताला नहीं लगाया क्यों
  नरेश-क्या जरूरत है इतने खतरनाक जानवर को कौन चुरायेगा
- एक बार **शिक्षक ने पप्पू** से पूछा-**पप्पू** बताओ चांद पर पहला कदम किसने रखा था
  पप्पु-नील आर्मस्ट्रांग
  शिक्षक-शाबाश और दुसरा
  पप्पु-दुसरा भी उसी ने रखा होगा सर वो लांगड़ा थोड़ी था
- **पिता** (अपनी बेटी से)-बेटी पहले तुम पापा बुलाती थी, अब डैड क्यों कहने लगी
  बेटी-वो पापा कहने से मेरी लिपस्टिक खराब हो जाती है।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सूची

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ पंजाबी बाग दिल्ली	11000/-
श्री हरकमल जीत जी ओमैक्स सिटी बहादुरगढ़	2500/-
श्री मनुज भट्ट धर्मविहार बहादुरगढ़	2500/-
श्री सुनील महता जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	2000/-
श्री दर्शन कुमार जी अग्निहोत्री दिल्ली	2000/-
श्री अशोक जी जून नूना माजरा झज्जर	1111/-
V.G.S. कम्पनी सैक्टर-16, बहादुरगढ़	1100/-
श्री सुखवीर सुपुत्र श्री भगताना सिंह रोहतक हरि.	1100/-
श्री वीरेन्द्र सिंह जी हुड्डा नोएडा, उत्तर प्रदेश	1100/-
शिव मन्दिर नूना माजरा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हरपाल जी डबास सुल्तानपुर डबास, दिल्ली	1100/-
श्री मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कलां दिल्ली	1100/-
श्री आचार्य चांदसिंह जी योगी आश्रम बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती सोनिया हेमलता जी दिल्ली	1000/-
श्री सतीश जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1000/-
श्री सोनू शौकीन जी मंगोलपुरखुर्द दिल्ली	1000/-
श्री मंगतराम जी गोयल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1000/-
श्री संजू जी परनाला रोड, बहादुरगढ़	1000/-
श्री पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर	551/-
श्री महेन्द्र सिंह दहिया खाण्डा सोनीपत	551/-
श्री महावीर सिंह जी गांव मातनहेल झज्जर	505/-
श्री दिनेश जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री विजयपाल जी सुपुत्र श्री सादराम जी नजफगढ़ रोड, बहा.	500/-
श्रीमती मृदुला ढाका जी दयानन्द नगर, बहा.	500/-
श्री मा. हरिसिंह जी दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री मा. ब्रह्मजीत जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती रूकमेश आर्या पत्नी श्री सुकर्मपाल जी सांगवान सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश कुमार जी सन्दुजा सतीश बुट हाऊस बहादुरगढ़	500/-
श्री रमेश राठी जी बहादुरगढ़	500/-
श्री पुरुषार्थ मुनि जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री अंकित ओहल्याण सुपुत्र श्री राजपाल ओहल्याण गढ़ी सां.	500/-
श्री राजेश जी अरोड़ा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री छोटेलाल जी आर्य ढाणी साल्हावास झज्जर	500/-
श्री बुद्धिराजा परिवार शिवा जी नगर, गुरुग्राम, हरियाणा	500/-

गौशाला हेतु दान

श्री मोनू शर्मा जी सु.श्री रामफल शर्मा जी दयानन्द नगर,बहा.	6000/-
श्री ध्रुव कुमार पुष्पांजलि एन्कलेव बहादुरगढ़	1100/-
श्री जगदीश चन्द्र जी गिरधर परिवार पश्चिम विहार, दिल्ली	1000/-
V.G.S. कम्पनी सैक्टर-16, बहादुरगढ़	2000/-
श्री रामवास जी जांगिड़ धनौरा टीकरी उत्तर प्रदेश	501/-
काला सरपंच परनाला बहादुरगढ़	500/-
श्री अनिल कुमार जी एवं समस्त परिवार बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री महात्मा लालदास जी महाराज कबीर आश्रम बहादुरगढ़
50 किलो चावल, 25 किलो दाल

फरिश्ता साँप एण्ड चरखा कैमिकल्स दिल्ली
1 पेटी साबुन, 400/- रूपये

श्री मोररीया सुपुत्र श्री सचिन जी किला मोहल्ला बहादुरगढ़
252 रूपये, आटा 10 किलो चावल,
5 किलो दाल, 2 किलो चीनी 25.5 किलो

श्री चरणजीत जी दुआ बहादुरगढ़ 20 किलो चावल

एक समय विशिष्ट भोजन देने वाले

1. कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़
2. श्री मनुज भट्ट धर्म विहार, बहादुरगढ़
3. माता वेदवती कौर मुरादपुर टेकना रोहतक हरियाणा

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मार्च 2020 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

ओ३म्

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ-योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

निःशुल्क योग-आसन-व्यायाम-प्राणायाम-स्वास्थ्य सुधार शिविर

एवम्

बृहद् यज्ञ ऋग्वेद मण्डल-5

बुधवार 25 मार्च से रविवार 29 मार्च 2020

सानिध्य:- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

यज्ञ ब्रह्मा:-आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय (रोहिणी दिल्ली),

योग प्रशिक्षक:-आचार्य चांदसिंह जी योगी (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़),

वेद पाठ:- श्री रवि शास्त्री, श्री विक्रम देव शास्त्री (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़)

इस अवसर पर अनेक प्रसिद्ध विद्वान्, भजनोपदेशक एवम् महानुभाव पधार रहे हैं। जिनके मधुर भजनों एवम् ओजस्वी, प्रेरणादायी, जीवनोपयोगी प्रवचनों से लाभ उठाने हेतु आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित् सादर आमंत्रित है। कार्यक्रम में पधार कर आध्यामिक एवम् स्वास्थ्य लाभ उठाएं।

दिनचर्या: बुधवार 25 मार्च 2020 को शिविर उद्घाटन सांय 4 बजे। बृहस्पतिवार 26 मार्च 2020 प्रात: 5 से 6.30 बजे तक आसन-व्यायाम-प्राणायाम-अभ्यास, प्रात: 7:00 बजे से 10 बजे तक यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं 3 बजे से 6 बजे तक यज्ञ-भजन-उपदेश, रविवार 29 मार्च 2020 यज्ञ पूर्णाहुति एवम् समापन समारोह प्रात: 8 बजे से 1 बजे

नोट- -यज्ञ एवम् शिविर में महिलाएं भी भाग ले सकती हैं। ❑ शिविरार्थी दैनिक आवश्यकता अनुसार अपना सामान व ऋतु अनुसार वस्त्र साथ लेकर आएं। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है, मेट्रो पीलर संख्या 819 के सामने स्थित है।

संयोजक:

राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

सत्यानन्द आर्य प्रधान ट्रस्ट	दर्शन कुमार अग्निहोत्री मन्त्री ट्रस्ट,	सत्यपाल वत्सार्य उपमन्त्री ट्रस्ट
कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान ट्रस्ट	विक्रमदेव शास्त्री व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062	स्वामी सच्चिदानन्द संचालक फर्रूखनगर आश्रम, 9729192992

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507, मो. 9416054195

आत्म-शुद्धि-पथ मासिक
मार्च 2020
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक- आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम के गुरुकुल का प्रथम वार्षिकोत्सव की झलकियां

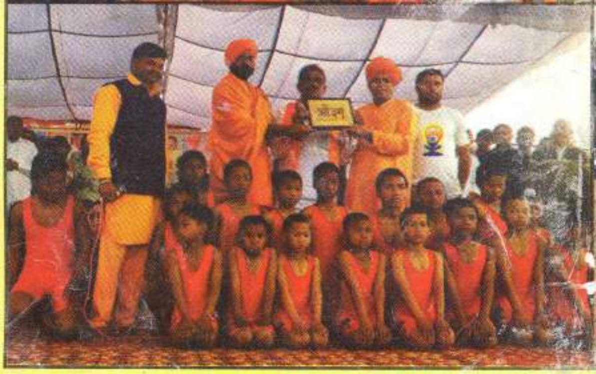

विवरण पृष्ठ 6 पर